

कोड : SG- 021

प्रोफेशनल एक्जामिनेशन बोर्ड, भोपाल (म.प्र.)

MP-वर्ग-1,2

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2018

संस्कृत

जय हो!

सर्वज्ञभूषण

प्रोफेशनल एक्जामिनेशन बोर्ड, भोपाल (म.प्र.)

MP-वर्ग-1,2

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2018

संस्कृत

जय हो!

लेखक

सर्वज्ञभूषण

प्रकाशक

संस्कृतगङ्गा

59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज

मो. 8004545096, 7800138404

4. संस्कृत साहित्य का इतिहास

काव्य

- काव्य शब्द संस्कृत भाषा में बहुत प्राचीन है जिसे कवि के कर्म के रूप में जाना जाता हैं-

  'कवेः कर्म काव्यम् ' (कवि +ण्यत्)
- 'कवि' शब्द 'कु' अथवा 'कव् ' धातु (भ्वादिगण आत्मनेपदी - कवते) से बना है। जिसका अर्थ है-

  ध्वनि करना, विवरण देना, चित्रण करना।
- महाकाव्य साहित्यविधा का उद्भव वैदिकसूक्तों से ही मिलता है जैसे - स्तुतिपरक नाराशंसियाँ, दान- स्तुतियाँ, संवासूक्त आदि द्वारा।
- रामायण और महाभारत जैसे आर्षकाव्य महाकाव्यसाहित्य विधा के भास्कर हैं जिन्होंने परवर्ती काव्यों को विषयवस्तु शैली, भाषा शैली, वर्णनविधि आदि की उपजीव्यता दी।
- वाल्मीकि से कालिदास की रचना तक आने में काव्यकला को कई शताब्दियाँ लगी।
- रामायण, महाभारत के बाद कालिदास की उत्पत्ति तक जो महाकाव्य लिखे गये थे वे केवल नाम मात्र ही शेष हैं।

  इस काल के कुछ ग्रन्थों के नाम निम्नलिखित हैं

  जाम्बवतीजय या **पातालविजय** (पाणिनि -450 ई॰पू॰)
- 18 सर्गों में श्रीकृष्ण द्वारा पाताल जाकर जाम्बवती के विजय और परिणय की कथा वर्णित है।
- राजशेखर के नाम से जल्हण की सूक्तिमुक्तावली (1247) में उद्धृत-**नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविरभूदिह।**

  आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतीजयम्॥
- वररुचि (350ई॰पू॰) ने **'स्वर्गारोहण'** नामक काव्य बनाया था।

  जिसे पतञ्जलि ने - **वाररुचं काव्यम्** कहा है।

  समुद्रगुप्त के 'कृष्णचरित' काव्य में इसका उल्लेख है।
- महाभाष्यकार पतञ्जलि -150 ई॰पू॰ में 'महानन्द -काव्य' की रचना की थी।
- समुद्रगुप्त ने कृष्णचरित में इसकी चर्चा की है।
- इसके बाद महाकवि कालिदास का युग प्रारम्भ होता है।
- मनोहारिणी शैली के प्रवर्तक कालिदास।
- इसी शृंखला में महाकवि भारवि, माघ और श्रीहर्ष का नाम उल्लेखनीय है।

काव्य के प्रकार

- काव्य के मुख्यतः दो भेद होते हैं- **श्रव्य और दृश्य**

काव्य का वर्गीकरण

श्रव्य-

(1) पद्य -
1. महाकाव्य - रघुवंशम् आदि
2. खण्डकाव्य - मेघदूतम् आदि
3. मुक्तककाव्य - नीतिशतकम् आदि

(2) चम्पू - नलचम्पू आदि

(3) कथा - कादम्बरी आदि

(4) आख्यायिका - हर्षचरितम् आदि

दृश्य–

रूपक - 10

1. नाटक	-	अभिज्ञानशाकुन्तलम्
2. प्रकरण	-	मृच्छकटिकम्
3. भाण	-	लीलामधुकरम्
4. प्रहसन	-	धूर्तचरितम्
5. डिम	-	त्रिपुरदाह
6. व्यायोग	-	सौगन्धिकाहरणम्
7. समवकार	-	समुद्रमन्थन
8. वीथी	-	मालविका
9. अङ्क	-	शर्मिष्ठा ययाति
10. ईहामृग	-	कुसुमशेखरविजय

उपरूपक -18

1. नाटिका	2. त्रोटक	3. गोष्ठी
4. सट्टक	5. नाट्यरासक	6. प्रस्थानक
7. उल्लास्य	8. काव्य	9. प्रेंखण
10. रासक	11. संलापक	12. श्रीगदित
13. शिल्पक	14. विलासिका	15. दुर्मल्लिका
16. हल्लीश	17. प्रकरणिका	18. भाणिका

महाकाव्य

- महाकाव्य को सर्वप्रथम आचार्य **भामह** ने परिभाषित किया।
- भामह के बाद **आचार्य दण्डी** ने काव्यादर्श में महाकाव्य का लक्षण प्रस्तुत किया।
- 'अग्निपुराण' में भी महाकाव्य के लक्षण प्राप्त होते हैं।
- महाकाव्य के विषय में विस्तृत वर्णन **विश्वनाथ** ने साहित्यदर्पण में किया।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार महाकाव्य का लक्षण-

- महाकाव्य सर्गों में विभक्त होता है।
- महाकाव्य का नायक देवता, कुलीन क्षत्रिय, धीरोदात्त आदि गुणों से युक्त हो सकता है अथवा एक वंशज अनेक कुलीन राजा भी नायक हो सकते हैं।

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।
सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वितः॥
एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।

- शृङ्गार वीर और शान्त रस में से कोई एक प्रधान रस होता है और अन्य रस उसके सहायक।
- इसमें सभी नाटक संधियाँ होती हैं।

शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गीरस इष्यते।
अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः।

- महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक अथवा किसी सज्जन व्यक्ति से सम्बद्ध होता है।
- धर्मार्थकाममोक्ष का वर्णन होता है तथा इनमें से किसी एक फल की प्राप्ति का वर्णन होता है।

इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद् वा सज्जनाश्रयम्।
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेद्॥

- प्रारम्भ में तीन प्रकार के मङ्गलाचरणों में से एक होता है नमस्कारात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक अथवा आशीर्वादात्मक में से एक।
- कहीं कहीं पर दुर्जन निन्दा या सज्जन प्रशंसा भी होती है।
- प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्दोबद्ध पद्य होते हैं। सर्गान्त में छन्द परिवर्तन होता है।
- सर्ग संख्या 8 से अधिक होनी चाहिए अथवा न्यूनतम 8 होनी चाहिए।
- सर्ग न बहुत छोटे न बहुत बड़े होने चाहिए।
- कहीं कहीं विविध छन्दों से युक्त सर्ग भी होते हैं।
- महाकाव्य में सन्ध्या, सूर्योदय, चन्द्रोदय, वन विहार, नगर, मार्ग, जलक्रीड़ा, वन, सागर, संयोग, वियोग, अन्धकार दिन, प्रातः, शिकार, पर्वत, ऋतु, ऋषि, युद्ध, विजय विवाह, पुत्र जन्मोत्सव आदि विषयों का अवसरानुकूल वर्णन होना चाहिए।
- महाकाव्य का नामकरण वर्णनीय चरित्र के नाम से या कवि के नाम से अथवा किसी दूसरे के नाम से होना चाहिए।
- सर्ग का नाम सर्ग में वर्णनीय कथा के नाम से होना चाहिए।
- लक्ष्य ग्रन्थों को ध्यान में रखकर ये लक्षण बने हैं।

महाकाव्यों का शैलीगत विकास

- संस्कृत महाकाव्यों का विकास दो पृथक् मार्गों से हुआ है - 1.सुकुमारमार्ग 2. विचित्रमार्ग

(1) सुकुमार मार्ग

- आरम्भ में महाकाव्य सुकुमार मार्गी थे।
- सुकुमारमार्ग को **रसमयी पद्धति** भी कहते हैं।
- प्रसादगुणपूर्ण शैली में निरूपित मार्ग।
- वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, अश्वघोष आदि कवियों की यही पद्धति है।
- रस और ध्वनि को काव्य की आत्मा मानकर अलंकारों का समुचित प्रयोग होता है।

(2) विचित्रमार्ग

- विचित्रमार्ग के रूप में पाण्डित्यपूर्ण शैली संस्कृत महाकाव्यों में मिलती है।
- शास्त्रीय वैदुष्यपूर्ण भाषा से युक्त महाकाव्य को अलंकार पद्धति या **विचित्रमार्ग** कहा गया।
- इस मार्ग में आनुषङ्गिक वर्णनों की प्रधानता।
- कविगण द्वारा वैदुष्य (विद्वता) का प्रदर्शन।
- विचित्रमार्ग के प्रवर्तक **भारवि** थे।
- भारवि का अनुसरण माघ ने किया।
- दोनों महाकवियों ने मूलकथा को बीच में छोड़कर प्रसक्तानुप्रसक्त वर्णनों में अपने को बाँध लिया।
- इस मार्ग में भाषा और विषय दोनों क्षेत्रों में विशेषता रहती है।
- इस पद्धति में चित्रकाव्य तक कवि पहुँच जाते हैं।
- श्लेषालंकार के प्रयोग से यह शैली दुरुह हो जाती है।
- ओज गुण को प्रमुख स्थान दिया।
- विचित्रमार्गी कवि कथानक की चिन्ता नहीं करते। भारवि ने अल्प कथानक को वर्णनों से भरकर 18 सर्गों का महाकाव्य बना दिया।

- जबकि सुकुमारमार्गी कालिदास ने रघुवंश के 19 सर्गों में अनेक पीढ़ियों के बड़े कथानक को समेट दिया।
- बाद के कवियों के लिए **वाल्मीकि की रसमयी पद्धति** तथा **भारवि की अलंकृत पद्धति** विद्यमान थी।
- बाद के कवियों ने अपनी रुचि के अनुसार दोनों में से एक को अपनाया।
- श्रीहर्ष ने दोनों के समन्वय का सफल प्रयास किया।

महाकाव्य

1. कुमारसम्भवम्	कालिदास	17 (अन्यमत 8)
2. रघुवंशम्	19	कालिदास
3. बुद्धचरितम्	28	अश्वघोष
4. सौन्दरनन्द	18	अश्वघोष
5. किरातार्जुनीयम्	18	भारवि
6. शिशुपालवधम्	20	माघ
7. नैषधीयचरितम्	22	श्रीहर्ष
8. भट्टिकाव्य (रावणवधम्)	22	भट्टि
9. जानकीहरणम्	20 से 25 सर्ग (प्राप्त 10-15 सर्ग)	कुमारदास
10. हरविजयम्	50 सर्ग	रत्नाकर (सबसे बड़ा महाकाव्य)
11. धर्मशर्माभ्युदय	21 सर्ग	हरिश्चन्द्र
12. राघवपाण्डवीयम्	13 सर्ग (माधवभट्ट)	कविराज

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

रचना	लेखक
1. जाम्बवतीविजयम् (पातालविजयम्)	पाणिनि
2. स्वर्गारोहणम्	कात्यायन (वररुचि)
3. महानन्दकाव्य	पतञ्जलि
4. प्रयागप्रशस्ति	हरिषेण
5. सेतुबन्ध	प्रवरसेन
6. हयग्रीववध	भर्तृमेण्ठ
7. गउडवहो	वाक्पति
8. रामचरित	अभिनन्द
9. नवसाहसाङ्कचरित	पद्मगुप्त
10. पारिजातहरणम्	कविकर्णपूर
11. नरनारायणानन्द	वस्तुपाल
12. रघुनाथचरित	वामनभट्टबाण
13. सेतुकाव्य	मातृगुप्त
14. कादम्बरीसार	अभिनन्द (काश्मीरी कवि)
15. रामायणमञ्जरी	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी)
16. भारतमञ्जरी	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी कवि)
17. विक्रमाङ्कदेवचरित	बिल्हण (काश्मीरी)
18. श्रीकण्ठचरितम्	मंखक (काश्मीरी)
19. राजतरङ्गिणी	कल्हण (काश्मीरी)
20. जातकमाला	आर्यशूर (बौद्ध कवि)
21. गुरुगोविन्दसिंह महाकाव्यम्	डॉ. सत्यव्रतशास्त्री
22. सीताचरितम्	डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी
23. जानकीजीवनम्	डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

नाट्य साहित्य

- साहित्य के सभी प्रकारों में रूपक या नाट्य श्रेष्ठ माना गया है। इसकी रचना को कवित्व की अन्तिम सीमा कहा जाता है- **'नाटकान्तं कवित्वम्।'**
- रूपक में गद्य-पद्य दोनों का मिश्रण तो रहता ही है, इसे सुनने के अतिरिक्त देखा जाता है। श्रव्य की अपेक्षा 'दृश्य' का अधिक सघन प्रभाव होता है।
- भरत ने नाट्यशास्त्र (6/31) में कहा है कि इस नाट्य-संसार में सब कुछ रसमय होता है, रस के बिना यहाँ कुछ भी प्रवृत्त नहीं होता- **'न हि रसादृते कश्चिदप्यर्थः प्रवर्तते।'** कोई व्यक्ति किसी भी रुचि का क्यों न हो, उसे अपना अनुकूल विषय नाट्य-जगत् में अवश्य मिल जायेगा। इसीलिए कालिदास ने इसकी प्रशंसा में कहा है-

नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्।

(मालविकाग्निमित्रम्- 1/4)

- काव्य को संस्कृत काव्यशास्त्रियों ने दृश्य और श्रव्य के रूप में दो वर्गों में रखा है। दृश्यकाव्य के दो भेद हैं- रूपक तथा उपरूपक। रूपक दस तथा उपरूपक अठारह प्रकार के होते हैं। रूपकों का एक प्रमुख भेद 'नाटक' है जो अपने अर्थ का विस्तार करके सामान्यतः आधुनिक भारतीय भाषाओं में नाट्यमात्र या दृश्यकाव्य मात्र (Drama) का अर्थ देता है।
- धनञ्जय ने नाट्य,रूप और रूपक-इन तीन शब्दों के प्रयोग के हेतुओं का निरूपण किया है जो वस्तुतः एकार्थक हैं।

- विविध पात्रों की अवस्थाओं का चतुर्विध अभिनय (आङ्गिक,वाचिक,सात्त्विक तथा आहार्य) के द्वारा जब नट अनुकरण करता है तो इसे **'नाट्य'** कहते हैं।

नाटक

- नाटक का कथानक प्रसिद्ध (इतिहास या पुराण में निर्दिष्ट) होता है, उसका नायक विख्यात वंश में उत्पन्न राजर्षि या राजा रहता है, उसे धीरोदात्त श्रेणी का होना चाहिए। कभी-कभी वीर रस या शृङ्गार रस के अनुरूप वह धीरोद्धत या धीरललित भी हो सकता है किन्तु धीरप्रशान्त नहीं। श्रीकृष्ण जैसे दिव्यादिव्य नायक भी होते हैं।
- नाटक का मुख्य रस शृङ्गार या वीर होता है **(एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा)**। अन्य सभी रसों का यथावसर प्रयोग किया जाता है।
- नाटक में पाँच से लेकर दस अङ्क तक रखे जाते हैं। उसमें कथानक का स्वाभाविक विकास दिखाने के लिए पाँच अर्थप्रकृतियाँ (बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य), पाँच अवस्थाएँ (आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम) तथा इनके योग से होने वाली पाँच सन्धियाँ (मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श और निर्वहण) यथासाध्य रखी जाती हैं।
- जिस नाटक में इन सब के प्रयोग के साथ दस अङ्क हों उसे 'महानाटक' कहते हैं। **बालरामायण, हनुमन्नाटक** आदि महानाटक हैं।
- नाटक की अन्तिम सन्धि में 'अद्भुत रस' का प्रयोग हो इससे रोचकता आती है **(कार्यो निर्वहणेऽद्भुतः)**
- नाटक की रचना गोपुच्छाग्रवत् होनी चाहिए अर्थात् आरम्भ और अन्त सूक्ष्म(पतला) हो, मध्यभाग स्थूल (दीर्घ) हो।
- क्रमशः कार्यो का संक्षिप्त उपसंहार होना चाहिए। नाटक को काव्यमात्र में श्रेष्ठ कहा गया है-

  'काव्येषु नाटकं रम्यम, नाटकान्तं कवित्वम्।'
- भास, कालिदास, भवभूति शूद्रक आदि के नाटक संस्कृत-जगत् में विख्यात हैं।

प्रकरण

- इसका कथानक कविकल्पित होता है। प्रायः लोककथाओं से कथानक लेकर इसकी रचना की जाती है।
- इसका नायक धीरप्रशान्त कोटि का मन्त्री, ब्राह्मण या वणिक् में से कोई एक होता है **(अमात्य-विप्र-वणिजामेकं कुर्याच्च नायकम्** -दशरूपक 3/39)। मृच्छकटिक में ब्राह्मण, मालतीमाधव में अमात्य तथा पुष्पदूतिका में वैश्य नायक है। इसमें नायिका दो प्रकार की होती है-कुलीना और वेश्या (गणिका)। किसी प्रकरण में कोई एक ही नायिका रहती है, (जैसे-मालतीमाधव में) तो किसी में दोनों प्रकार की नायिकाएं होती है (जैसे- मृच्छकटिक में)।
- धूर्त,जुआरी,विट,चेट आदि अनेक पात्रों से युक्त प्रकरण **'संकीर्ण'** कहलाता है। नाट्यदर्पण (2/68) में नायिका के आधार पर प्रकरण के इक्कीस भेद कहे गये हैं। रस की दृष्टि से इसमें शृङ्गाररस प्रधान होता है।

भाण

- इसमें कोई अत्यन्त चतुर तथा बुद्धिमान् विट अपने या दूसरे के अनुभव के आधार पर धूर्त के चरित का वर्णन करता है। यह एक अङ्क तथा एक ही पात्र का रूपक है। वह पात्र विट ही रहता है जो आकाशभाषित के रूप में स्वयं प्रश्न-उत्तर (उक्ति-प्रत्युक्ति) का प्रयोग करता है।
- इसमें मुख और निर्वहण सन्धियाँ रहती हैं, अन्य सन्धियाँ नहीं।

प्रहसन

- यह हास्यरस-प्रधान रूपक होता है, जिसमें कथानक कल्पित रहता है। इसमें धर्म का पाखण्ड करने वाले (जैन-बौद्ध) साधुओं, केवल जाति से ब्राह्मण कहलाने वाले धूर्तों एवं सेवक-सेविकाओं का चरित्र दिखाया जाता है।
- प्रहसन में वेशभूषा तथा भाषा की विकृति से भी हास्योत्पादन होता है। भाण के समान इसमें भी दो सन्धियों (मुख एवं निर्वहण) एवं 10 लास्याङ्गों का प्रयोग होता है। विश्वनाथ ने इसमें एक या दो अङ्क माने हैं।
- प्रहसन के तीन भेद होते हैं-शुद्ध, विकृत और संकीर्ण।

डिम

- इसका कथानक प्रसिद्ध होता है। नाट्य की कैशिकी वृत्ति वर्जित है, शेष तीनों वृत्तियाँ (भारती, सात्त्वती, आरभटी) प्रयुक्त होती हैं।
- इसमें नायक देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस आदि होते हैं जो मानवेतर हैं, भूत, प्रेत, पिशाच आदि पात्रों का भी इसमें समावेश होता है। उद्धत कोटि के 16 पात्र इसमें रहते हैं। इसका प्रधान रस रौद्र होता है। माया, इन्द्रजाल, युद्ध,भगदड़ आदि के दृश्यों से यह भरा होता है।
- विमर्श सन्धि का प्रयोग नहीं होता। इसमें चार अङ्क रहते हैं।
- भरत ने **'त्रिपुरदाह'** नामक डिम का उल्लेख किया है।

व्यायोग

- इसका कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है जो किसी विख्यात उद्धत व्यक्ति (भीम, दुर्योधन आदि) पर आश्रित रहता है।
- इसमें गर्भ एवं विमर्श नामक सन्धियाँ नहीं होती हैं। रसों की दीप्ति डिम के समान होती है।

- इसकी कथावस्तु एक दिन की घटनाओं से सम्बद्ध होती है।
- इसमें एक ही अंक रहता है तथा पुरुष-पात्रों की संख्या अधिक होती है।भास का **'मध्यमव्यायोग'** इसका मुख्य उदाहरण है।

समवकार

- इसका इतिवृत्त इतिहास-पुराण में प्रसिद्ध होता है जिसमें देवताओं और दैत्यों की कथा होती है। कैशिकी को छोड़कर अन्य वृत्तियाँ एवं विमर्श को छोड़कर अन्य सन्धियाँ होती हैं। इसमें तीन अङ्क रहते हैं जिनमें तीन बार कपट, तीन बार धर्म-अर्थ-काम का शृङ्गार एवं तीन बार पात्रों में भगदड़ दिखायी जाती है।
- इसके पात्र देवता और दानव होते हैं जिनकी संख्या 12 होती है, सभी वीररस से भरे रहते हैं और सब को पृथक्-पृथक् फल मिलता है।
- 'बिन्दु' नामक अर्थप्रकृति एवं 'प्रवेशक' नामक अर्थोपक्षेपक का इसमें प्रयोग नहीं किया जाता।
- नाट्यशास्त्र में **'समुद्रमन्थन'** नामक समवकार के अभिनय का उल्लेख है। भास के 'पञ्चरात्र' में भी कुछ लक्षण मिलते हैं।

वीथी

- यह शृङ्गाररस-युक्त काङ्क्षी रूपक है। इसके कई लक्षण भाण के समान हैं। जैसे-केवल दो सन्धियाँ (मुख और निर्वहण) होना, शृङ्गाररस का सूच्य होना।

अङ्क

- इसे संशय-निवारणार्थ **'उत्सृष्टिकाङ्क'** भी कहते हैं क्योंकि रूपकों के खण्ड भी 'अङ्क' होते हैं। इस रूपक-भेद में कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है, किन्तु कवि उसमें यथेष्ट परिवर्तन भी करता है। भाण के समान सन्धि (मुख और निर्वहण) भारती वृत्ति भाग तथा अङ्क केवल एक होते हैं।
- इसके नायक और अन्य पात्र साधारण होते हैं। इसमें करुणरस की प्रधानता होती है। अतः स्त्रियों का रोदन होना चाहिए।
- पात्रों में वाग्युद्ध एवं जय-पराजय की योजना होती है।
- कुछ आचार्यों ने इसमें एक से लेकर तीन अङ्कों तक का विधान किया है।

ईहामृग

- इसका कथानक प्रख्यात और कल्पित का मिश्रित रूप होता है। इसमें चार अङ्क तथा तीन सन्धियाँ होती हैं(गर्भ और विमर्श सन्धियाँ नहीं होती)

उपरूपक

- विश्वनाथ ने 18 उपरूपकों का यह क्रम रखा है-
  1. नाटिका 2. त्रोटक 3. गोष्ठी 4. सट्टक 5. नाट्यरासक 6. प्रस्थानक 7. उल्लास्य 8. काव्य 9.प्रेंखण 10.रासक 11. संलापक 12.श्रीगदित 13. शिल्पक 14.विलासिका 15. दुर्मल्लिका 16. प्रकरणिका 17. हल्लीश और 18. भाणिका

नाटिका

- नाटिका में चार अङ्क होते हैं।
- स्त्री-पात्रों का बाहुल्य एवं शृङ्गाररस की प्रधानता इसकी विशिष्टता है।
- इसका नायक धीरललित श्रेणी का कोई प्रसिद्ध राजा होता है।
- शृङ्गाररस के कारण कैशिकी वृत्ति एवं तदनुकूल गीत,नृत्य, वाद्य, हास्य आदि इसमें दिखाये जाते हैं।
- इसमें दो नायिकाएँ होती हैं-देवी (बड़ी रानी) तथा मुग्धा कन्या।
- उदयन को नायक बनाकर हर्ष ने **'प्रियदर्शिका'** और **'रत्नावली'** नामक नाटिकाओं की रचना द्वारा इस विधा का प्रयोग किया है।

सट्टक

- सट्टक भी नाटिका के समान होता है।
- इसमें सम्पूर्ण पाठ प्राकृत में होता है।
- प्रवेशक-विष्कम्भक का प्रयोग नहीं किया जाता है।
- अद्भुत रस का प्राचुर्य होता है।
- अङ्कों को 'जवनिकान्तर' कहते हैं।
- राजशेखर की **'कर्पूरमञ्जरी'** सट्टक है।

त्रोटक

- तोटक या त्रोटक में सात,आठ, नव या पाँच अङ्क रहते हैं।
- प्रधानरस शृङ्गार होता है।
- कालिदास का **'विक्रमोर्वशीम्'** त्रोटक है।

नाट्योत्पत्ति

- संस्कृत दृश्यकाव्य का उद्भव कब और किस प्रकार से हुआ, इस प्रश्न का निश्चित समाधान करना कठिन है। फिर भी कुछ सिद्धान्तों का परिचय तो दिया ही जा सकता है।

भरत का मत

- नाट्य विज्ञान पर सर्वप्रथम ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' ही है जिसका काल 100 ई॰ पू॰ से 300 ई॰ के बीच माना जाता है।
- भरत का मत 'नाट्यशास्त्र' में मिलता है कि सभी देवताओं ने मिलकर ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि हमें ऐसे मनोरंजन का साधन प्रदान करें जो दृश्य और श्रव्य दोनों हो और जिसे सभी वर्णों के लोग ग्रहण कर सकें, ब्रह्मा ने इस प्रार्थना पर चारों वेदों से सार भाग लेकर 'नाट्यवेद' के रूप में पञ्चम वेद का

निर्माण किया (**नाट्यवेदं ततश्चक्रे चतुर्वेदाङ्गसम्भवम्** 1/16) उन्होंने ऋग्वेद से पाठ्य (संवाद,कथनोपकथन), सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस-तत्त्व लेकर 'नाट्यवेद' की रचना की।

संवाद-सूक्तों से नाट्य की उत्पत्ति

- मैक्समूलर, सिल्वाँलेवी,फॉन श्रोएदर, हर्टल आदि यूरोपीय विद्वानों ने यह सिद्धान्त दिया कि ऋग्वेद के कतिपय संवाद-सूक्त ही नाटकों के प्राचीनतम रूप हैं।
- इन संवाद-सूक्तों में इन्द्र- मरुत् संवाद(ऋ0 1/165,170), अगस्त्य-लोपामुद्रा संवाद (ऋ0 1/179), विश्वामित्र-नदी संवाद (3/33), वसिष्ठ-सुदास संवाद (ऋ0 7/83), यम-यमी संवाद (ऋ0 10/10), इन्द्र-इन्द्राणी-वृषाकपि संवाद (ऋ 10/86), पुरूरवा-उर्वशी संवाद(10/95) तथा सरमा-पणि संवाद(10/108) प्रमुख है।

यूनानी रूपकों से उत्पत्ति

- वेबर तथा विन्डिश ने संस्कृत रूपकों का उद्भव यूनानी रूपकों से सिद्ध किया है।
- जर्मनी के ही विद्वान् पिशेल ने इस मत का प्रबल खण्डन किया है।

पुत्तलिका-नृत्य-सिद्धान्त

- प्रो. पिशेल ने यह विचार दिया है कि प्राचीन भारत में कठपुतलियों का नृत्य दिखाया जाता था। उसे ही सजीव रूप देने के लिए मानवों को मंच पर प्रस्तुत करके नाटकों का अभिनय प्रारम्भ हुआ।

मृतात्म-श्राद्ध-सिद्धान्त (वीर-पूजा)

- डॉ. रिजवे ने यह मत रखा था कि अपने मृत पूर्वजों के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए जिस प्रकार यूनानी दुःखान्त रूपकों का उद्भव हुआ था, उसी प्रकार भारत में भी अपने दिवंगत वीर पुरुषों के प्रति आदर-भाव दिखाने के लिए नाटक अभिनीत होते थे।
- रामलीला और कृष्णलीला इसी प्रवृत्ति के पोषक दृष्टान्त हैं।

उत्सव-सिद्धान्त

- यूरोप के कुछ विद्धानों ने अपने यहाँ होने वाले मे-पोल-नृत्य को संस्कृत रूपकों का भी प्रथम रूप कहा है।

छाया-नाटक-सिद्धान्त

- जर्मन विद्वान् ल्यूडर्स तथा स्टेन कोनो का मत है कि छाया - नाटकों में जो छाया-चित्रों का प्रदर्शन होता है, वही संस्कृत रूपकों के मूल रूप रहे होंगे।

संस्कृत नाट्य की विशिष्टताएँ-

- भारतीय रूपक मनोरंजन-प्रधान या आनन्दपरक होते हैं।
- भरत ने इसकी व्याख्या की कि दुःखी, श्रान्त, शोकाकुल एवं तपःखिन्न लोगों को सही समय पर विश्रान्ति प्रदान करने वाला यह 'नाट्य' है-

दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति।।

(ना.शा. 1/114)

- संस्कृत रूपकों में 'दुःखान्त' की व्यवस्था नहीं है।
- यहाँ दस प्रकार के रूपक और अठारह प्रकार के उपरूपक होते हैं।
- इनमें 'नाटक' बहुत लोकप्रिय हैं।
- प्रकरण,प्रहसन,भाण,नाटिका, सट्टक आदि भी बहुत संख्या में लिखे गये हैं। इस प्रकार संस्कृत दृश्य काव्य का क्षेत्र व्यापक है।
- नाट्य-भेदों में कथानक प्रसिद्ध या कल्पित भी होता है।
- संस्कृत रूपकों में कथानक का विकास कुछ सिद्धान्तों पर आश्रित होता है। कथानक को अर्थप्रकृतियों, अवस्थाओं और सन्धियों में विभक्त किया जाता है।
- पात्रों की व्यवस्था भी रूपकों के विभाजन का आधार है। मुख्य पात्र नायक और नायिका हैं। जिनके भेदोपभेद माने गये हैं। नायकों को धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरप्रशान्त और धीरललित के रूप में चार प्रकार का माना गया है।
- संस्कृत रूपकों का पारस्परिक भेद रस प्रयोग के कारण भी है। नाटकों में शृङ्गार, वीर या शान्त-रस को मुख्य (अङ्गी) रस के रूप में रखा जाता है
- भवभूति ने करुणरस को प्रधान स्थान दिया है, अन्य सभी रसों का यथोचित निवेश होता है।
- नाट्यशास्त्रियों ने जीवन की कुछ क्रियाओं का मञ्चन की दृष्टि से वर्जन किया है। अनुचित, असभ्य और अशुभ दृश्य मञ्च पर नहीं दिखाये जाते। जैसे-युद्ध, मृत्यु, निद्रा, सम्भोग, शाप, चुम्बन, भोजन आदि।
- भाषा प्रयोग का विधान संस्कृत रूपकों की महत्त्वपूर्ण विशिष्टता है। भरत ने ही विधान किया था कि उच्च और मध्य वर्ग के पात्रों की भाषा संस्कृत होगी। प्राकृत में भी क्षेत्रीय प्रभेदों के विधान की दृष्टि से सामान्यतः महाराष्ट्री ,शौरसेनी, मागधी और अर्धमागधी प्राकृतों का प्रयोग किया गया है।
- रूपक भी धर्म के उपकरणों का यथेष्ट उपयोग करते हैं जैसे नान्दी या प्रस्तावना में देवस्तुति और भरतवाक्य में आशीर्वाद देना।
- पाश्चात्त्य नाट्य-विज्ञान में स्वीकृत अन्वितित्रय संस्कृत रूपकों में मान्य नहीं है।

- संस्कृत रूपकों में रसोद्भावन की दृष्टि से उचित स्थानों पर पद्य-प्रयोग किया जाता है।
- कथनोपकथन का मुख्य रूप तो गद्य ही रहता है किन्तु कुछ आवश्यक स्थलों में रोचकता, प्रकृति-वर्णन, नीति-शिक्षा, सुभाषित, विस्तृत घटनाओं का संक्षेपण आदि उद्देश्यों से पद्यों का भी प्रयोग होता है।
- विदूषक का प्रयोग संस्कृत रूपकों में हास्य-व्यंग्य के निवेश के लिए तो होता ही है,वह कथानक का भी एक अङ्ग होता है। वह कथा-प्रवाह को आगे बढ़ाता है।
- शुद्ध हास्य की दृष्टि से 'प्रहसन' और 'भाण' नामक रूपक-भेद संस्कृत में होते हैं जिसमें समाज की विसंगतियों पर व्यंग्य होता है।
- संस्कृतभाषा के रूपकों के प्रारम्भ में प्रस्तावना होती है। जिसमें कवि-परिचय के साथ नाटक के अभिनय के अवसर का भी संकेत रहता है।
- नान्दीपाठ से नाटक का प्रारम्भ एवं भरतवाक्य से समाप्ति, अङ्कों की योजना, बीच-बीच में विष्कम्भक, प्रवेशक आदि देना ये सब रचना-प्रक्रिया के मुख्य अङ्ग हैं।
- बीच में मञ्च से पात्रों का निर्गम,प्रवेश,स्वागत-भाषण, जनान्तिक भाषण आदि संकेत नाटकों के अभिनय और मञ्चन को सुविधायुक्त कर देते हैं।

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख नाट्यग्रन्थ

ग्रन्थ	अङ्क	लेखक
1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	4	भास
2. स्वप्नवासवदत्तम्	6	भास
3. ऊरुभङ्गम्	एकाङ्की	भास
4. दूतवाक्यम्	एकाङ्की	भास
5. पञ्चरात्रम्	3	भास
6. बालचरितम्	5	भास
7. दूतघटोत्कचम्	एकाङ्की	भास
8. कर्णभारम्	एकाङ्की	भास
9. मध्यमव्यायोगः	एकाङ्की	भास
10. प्रतिमानाटकम्	7	भास
11. अभिषेकनाटकम्	6	भास
12. अविमारकम्	6	भास
13. चारुदत्तम्	4	भास
14. मृच्छकटिकम् (प्रकरण)	10	शूद्रक (शिमुक)
15. मालविकाग्निमित्रम्	5	कालिदास
16. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	5	कालिदास
17. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7	कालिदास
18. मुद्राराक्षसम्	7	विशाखदत्त
19. प्रियदर्शिका (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
20. रत्नावली (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
21. नागानन्द	5	हर्ष (हर्षवर्धन)
22. वेणीसंहारम्	6	भट्टनारायण
23. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	10	भवभूति
24. महावीरचरितम्	7	भवभूति
25. उत्तररामचरितम्	7	भवभूति
26. शारिपुत्रप्रकरण् (प्रकरण)	9	अश्वघोष
27. अनर्घराघवम्	7	मुरारि
28. बालरामायणम् (महानाटक)	10	राजशेखर
29. बालभारत (प्रचण्डपाण्डव)	2	राजशेखर
30. विद्धशालभञ्जिका (नाटिका)	4	राजशेखर
31. कर्पूरमञ्जरी (सट्टक)	4	राजशेखर
32. कुन्दमाला	6	दिङ्नाग
33. प्रबोधचन्द्रोदय	6	कृष्णमिश्र
34. प्रसन्नराघवम्	7	जयदेव

कुछ अन्य नाट्यग्रन्थ

नाट्यग्रन्थ	लेखक
1. आश्चर्यचूडामणि	शक्तिभद्र
2. रामाभ्युदय	यशोवर्मा
3. महानाटक	हनुमान्
4. हनुमन्नाटक	दामोदर मिश्र
5. रुक्मिणीहरणम्	वत्सराज
6. त्रिपुरदाह	वत्सराज
7. समुद्रमन्थन	वत्सराज
8. सौगन्धिकाहरणम्	विश्वनाथ
9. सामवतम्	अम्बिकादत्तव्यास
10. दूताङ्गद (छायानाटक)	सुभट
11. सुभद्रापरिणय (छायानाटक)	व्यासरामदेव
12. पार्वतीपरिणय	बाणभट्ट

गद्य काव्य

- 'गद्य' शब्द गद्-धातु (व्यक्तायां वाचि) से यत् प्रत्यय लगकर बना है जिसका अर्थ है मानव की अभिव्यक्ति की मौलिक प्रक्रिया।
- दण्डी ने काव्यादर्श में 'गद्यकाव्य' की परिभाषा देकर इसे आख्यायिका और कथा के रूप में विभाजित किया है।
  'अपादः पदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा।' (1/23)
- गद्यकाव्य इतना कठिन और विरल हो गया कि आठवीं शताब्दी ई0 में एक उक्ति चल पड़ी-**'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'** अर्थात् गद्यकाव्य लिखना कवियों की कड़ी परीक्षा है।
- गद्य का प्रथम रूप हमें यजुर्वेद की संहिताओं में मिलता है।
- यजुर्वेद की परिभाषा ही दी गयी है- **'अनियताक्षरावसानं यजुः'** तथा **'गद्यात्मकं यजुः।'**
- कृष्ण-यजुर्वेद की तैत्तिरीय, काठक और मैत्रायणी संहिताएँ अधिकांशतः गद्यात्मक हैं।
- ब्राह्मण और आरण्यक (जो पूर्णतः गद्य में ही हैं) पतञ्जलि का महाभाष्य, शबरस्वामी का शाबरभाष्य (मीमांसा-दर्शन पर),शंकराचार्य का शारीरकभाष्य (ब्रह्मसूत्र पर) इत्यादि उत्कृष्ट शास्त्रीय गद्य के रूप हैं।
- आचार्य शंकर की गद्यशैली प्रसन्न-गम्भीर है,इसका परिमाण भी प्रचुर है क्योंकि दस उपनिषदों, गीता तथा ब्रह्मसूत्र पर उन्होंने भाष्य लिखे हैं।
- साहित्यिक गद्य के प्रयोग का अनुमान कात्यायन और पतञ्जलि के द्वारा दी गयी सूचनाओं से होता है।
- पतञ्जलि ने तो तीन आख्यायिकाओं के नाम भी दिये हैं- **वासवदत्ता, सुमनोत्तरा** तथा **भैमरथी**।
- साहित्यिक गद्य का स्पष्ट उदाहरण अभिलेखों में प्राप्त होता है। इस दृष्टि से रुद्रदामन का गिरिनार अभिलेख 150ई0) तथा हरिषेणकृत समुद्रगुप्त-प्रशस्ति (प्रयाग स्तम्भलेख 360 ई0) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
- समुद्रगुप्त की विजय-यात्राओं और व्यक्तिगत गुणों का वर्णन प्रयाग-प्रशस्ति में हुआ है। इस प्रशस्ति के लेखक हरिषेण हैं।
- साहित्यिक गद्य का विकासशील रूप **दण्डी, सुबन्धु** या **बाण** की रचनाओं में प्राप्त होता है।

गद्यकाव्य के भेद

- संस्कृत गद्यकाव्य के दो मुख्य भेद माने गये हैं-कथा और आख्यायिका
- आख्यायिका ऐतिहासिक विषयों पर एवं कथा पूर्णतः काल्पनिक विषयों पर आश्रित होती है।
- बाणभट्ट की गद्य-रचनाओं में 'हर्षचरित' आख्यायिका तथा 'कादम्बरी' कथा के रूप में प्रसिद्ध हुई।
- कथा में कथावस्तु कविकल्पित होती है।
- आख्यायिका में ऐतिहासिक होती है।
- कथा के आरम्भ में पद्यों के द्वारा सज्जनों की प्रशंसा, दुष्टों की निन्दा तथा कवि के वंश का वर्णन होता है।
- कथा का विभाजन नहीं होता, आख्यायिका उच्छ्वासों या निःश्वासों में विभक्त होती है।
- उच्छ्वासों के आरम्भ में भावी घटना का परोक्ष निर्देश करने वाले पद्य भी होते हैं।
- कथा में मुख्य कथानक को लाने के लिए दूसरी कथा से आरम्भ किया जाता है।
- आख्यायिका में कवि अपना वृत्तान्त देकर मुख्य कथा को आरम्भ करता है। इन दोनों में समानता के तथ्य भी बहुत हैं। जैसे- 1. दोनों की रचना संस्कृत गद्य में होती है। 2. गद्य की शैली दोनों में समान रहती है। 3. रसों और भावों का समान रूप से प्रयोग होता है। 4. नगर,वन,सरोवर,राजा,राजसभा,मृगया प्रेम आदि का समान रूप से वर्णन दोनों में होता है

गद्य के प्रकार

समास के प्रयोग तथा वृत्तभाग के निवेश की दृष्टि से गद्य के चार प्रकार माने गये हैं-

1. मुक्तक 2. वृत्तगन्धि
3. उत्कलिकाप्राय 4. चूर्णक

- समास से रहित गद्य-रचना को मुक्तक कहते हैं।
- जहाँ गद्य में छन्द के अंश आ जाएँ उसे वृत्तगन्धि कहते हैं।
- लम्बे समासों से युक्त गद्य उत्कलिकाप्राय कहलाता है तथा अल्प समासों से युक्त गद्य को चूर्णक कहा जाता है।

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गद्यकाव्य

गद्यरचना	लेखक
1. दशकुमारचरितम्	दण्डी
2. अवन्तिसुन्दरीकथा	दण्डी
3. वासवदत्ता (कथा)	सुबन्धु
4. कादम्बरी (कथा)	बाणभट्ट

5. हर्षचरितम् (आख्यायिका) बाणभट्ट
6. मुकुटताडितक बाणभट्ट
7. मन्दारमञ्जरी विश्वेश्वर पाण्डेय
8. शिवराजविजयम् अम्बिकादत्तव्यास
(ऐतिहासिक उपन्यास)
9. प्रबन्धमञ्जरी हृषीकेश भट्टाचार्य
10. कथापञ्चकम् पण्डिता क्षमाराव
11. ग्रामज्योतिः पण्डिता क्षमाराव
12. कथामुक्तावलिः पण्डिता क्षमाराव
13. कौमुदीकथाकल्लोलिनी डॉ. रामशरणत्रिपाठी
14. तिलकमञ्जरी धनपाल
15. गद्यचिन्तामणि वादीभसिंह
16. वेमभूपालचरितम् वामनभट्ट बाण
17. द्वासुपर्णा डॉ. रामजी उपाध्याय
18. गद्यरामायणम् वरददेशिक
19. गाँधीचरितम् चारुदेवशास्त्री
20. रामचरितम् देवविजयगणी

गीतिकाव्य

- गीतिकाव्य का उद्‌गम ऋग्वेद की ऋचाओं से माना जाता है।
- अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि देवों के प्रति ऋषियों द्वारा स्तुतियाँ वेदों में ही की गयी हैं।
- इन्द्र के प्रति एक ऋचा में कहा गया है-

  तुञ्जे- तुञ्जे य उत्तरे, स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः।
  न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्॥ (ऋ0 1.7.7)

  (अर्थात् विविध वस्तुओं का दान करने वाले अन्य देवों के लिए जो स्तोत्र है, मैं इन्द्र की स्तुति के लिए उपयुक्त स्तोत्र नहीं मानता)
- प्रजापति की स्तुति में हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋ0 -10.12.1) उत्कृष्ट गीतिकाव्य है जिसके प्रत्येक मन्त्र के अन्त में आया है- **'कस्मै देवाय हविषा विधेम।'**
- इन्द्र के कई स्तोत्रों में उनके वीरकर्मों का वर्णन है जिससे ओजस्विता का संचार होता है जैसे-

  यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्,
  यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्।
  यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो,
  यो द्यामस्तम्नात्स जनास इन्द्रः। (ऋ0- 2.12.2)
- ऋग्वेद में ही प्रभात काल की देवी उषा का वर्णन उसके सौन्दर्यपक्ष को विशेष रूप से अङ्कित करके किया गया है। **'जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्त्रेव नि रिणीते अप्सः।'** (ऋ0-1.124.7)
- इसाप्रकार अथर्ववेद में भूमि की स्तुति में गीतिकाव्य का विन्यास है।
- पृथ्वी देवी के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति 63 मन्त्रों में अथर्वा ऋषि ने की है।
- सामवेद का सङ्गीत पक्ष गीतिकाव्य के अनन्यगुण को विशेष रूप से धारण करता है।
- इसलिए वैदिक युग ही संस्कृत गीतिकाव्य के उद्भव के लिए ठोस धरातल देता है।
- रामायण का उदय गीतिकाव्य के रूप में ही हुआ है। इसमें विरह-वर्णन, देवस्तुति आदि गीतितत्त्व को ही स्पष्ट करता है।
- महाभारत में प्राप्त होने वाली स्तुतियाँ भी गीतिकाव्य के रूप में स्वीकृत हैं।
- गीता के 11 वें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण का विराट् रूप वर्णन प्रकृष्टस्तोत्र काव्य है।
- भागवतपुराण, विष्णु तथा नारदपुराणादि में उपास्य देवों की स्तुतियाँ मिलती हैं।
- अध्यात्म रामायण में राम की ब्रह्म के रूप में स्तुति वर्णित है।
- लौकिक साहित्य में कालिदास से गीतिकाव्य का प्रारम्भ होता है। अतः कालिदास **संस्कृत गीतिकाव्य के प्रवर्तक** हैं।
- **गीतिकाव्य के दो भेद हैं-**

  1. शृङ्गारिक गीतिकाव्य
  2. आध्यात्मिक या नैतिक गीतिकाव्य

1. शृङ्गारिक गीतिकाव्य

- शृङ्गार मूलक संस्कृत गीतिकाव्यों का वर्ण्य विषय जीवन का भौतिक सुख है जिसमें स्त्रियों के सौन्दर्य, हाव-भाव, विलास आदि का वर्णन करते हुए उनके प्रति पुरुष के आकर्षण का चित्रण हुआ है।
- कुछ प्रमुख गीतिकाव्यों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है-

1. ऋतुसंहार

- ऋतुसंहार संस्कृत वाङ्मय का प्रथम गीतिकाव्य है।
- यह कालिदास की प्रामाणिक रचना के रूप में छः सर्गों में निबद्ध है, जिसमें ग्रीष्म से वसन्त तक के छहों ऋतुओं का शृङ्गारिक वर्णन है।

➤ इसमें 144 पद्य हैं।

2. मेघदूत

2. मेघदूत कालिदास की प्रौढ़ एवं परिष्कृत गीति रचना है।
➤ यह **मन्दाक्रान्ता छन्द** में रचित एवं **दो खण्डों** में विभाजित है।
➤ टीकाकार मल्लिनाथ ने मेघदूत के **121** पद्यों की व्याख्या की है, किन्तु 6 श्लोक को प्रक्षिप्त मानकर **115** श्लोकों को प्रामाणिक माना है।
➤ इसमें यक्ष- यक्षिणी की प्रणय कथा का वर्णन है।

3. गाथा-सप्तशती

➤ यह **'हालकवि'** द्वारा रचित, **सात सौ मुक्तक पद्यों** की प्राकृत रचना है।
➤ इसका प्राकृत नाम- **'गाहासत्तसई'** है।

4. भर्तृहरि के शतकत्रय

➤ **भर्तृहरि** ने तीन शतकों की रचना की है जो गीतिकाव्य के अर्न्तगत वर्णित हैं-
1. नीतिशतक- (111 पद्य)
2. शृङ्गारशतक- (103 पद्य)
3. वैराग्यशतक- (111 पद्य)

5. अमरुकशतक

➤ इसके रचयिता **'अमरुक'** हैं। यह मुक्तक काव्य है।
➤ इसके पद्यों की संख्या 90 से 115 तक मिलती है।

6. भल्लट शतक

➤ यह अन्योक्ति पूर्ण नीतिमूलक पद्यों का संग्रह है।
➤ यह कश्मीरी कवि **'भल्लट'** की रचना है।

7. गीतगोविन्द

➤ **'गीतगोविन्द'** संस्कृतभाषा का श्रेष्ठ गीतिकाव्य है।
➤ इसके रचनाकार **'जयदेव'** हैं।
➤ इसमें 12 सर्ग तथा 24 प्रबन्ध हैं।

8. भामिनीविलास

➤ यह पण्डितराज जगन्नाथ के स्फुट पद्यों का संग्रह है।
➤ यह चार भागों (विलासों) में विभक्त है।

2. स्तोत्रकाव्य या धार्मिक गीतिकाव्य

➤ स्तोत्रकाव्य में भक्ति तथा वैराग्य दोनों विषयों का ग्रहण होता है।
➤ कुछ प्रमुख स्तोत्रकाव्य निम्नलिखित हैं-

1. पुष्पदन्त का शिवमहिम्न स्तोत्र

➤ मुख्यतः शिखरिणी छन्द में रचित शिव की महिमा का वर्णन है।

2. मयूरभट्ट का सूर्यशतक

➤ स्रग्धरा छन्द का प्रथम स्तोत्रकाव्य है।
➤ 100 पद्यों में सूर्य महिमा वर्णित है।

3. बाणभट्ट का चण्डीशतक

➤ इसमें भगवती दुर्गा की स्तुति है।
➤ इसमें भी स्रग्धरा छन्द के 100 पद्य हैं।

अन्य स्तोत्र ग्रन्थ

आनन्दलहरी, मुकुन्दमाला, वरदराजस्तव, नारायणीय, मूकपञ्चशती, सौन्दर्यलहरी, शिवताण्डवस्तोत्र आदि।

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गीतिकाव्य

गीतिकाव्यम्	लेखक
1. ऋतुसंहारम्	कालिदास
2. मेघदूतम्	कालिदास
3. नीतिशतकम्	भर्तृहरि
4. शृङ्गारशतकम्	भर्तृहरि
5. वैराग्यशतकम्	भर्तृहरि
6. अमरुशतकम्	अमरुक
7. गीतगोविन्दम्	जयदेव
8. गङ्गालहरी/पीयूषलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
9. अमृतलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
10. सुधालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
11. लक्ष्मीलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
12. करुणालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
13. आसफविलास	पण्डितराज जगन्नाथ
14. जगदाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
15. प्राणाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
16. यमुनावर्णनम्	पण्डितराज जगन्नाथ
17. भामिनीविलास (गीतिकाव्य)	पण्डितराज जगन्नाथ
18. गाथासप्तशती	हाल
19. चौरपञ्चाशिका	बिल्हण
20. आर्यासप्तशती	गोवर्धनाचार्य
21. चाणक्यशतकम्	चाणक्य
22. घटकर्परकाव्यम्	घटकर्पर
23. नीतिसार	घटकर्पर
24. चण्डीशतकम्	बाणभट्ट
25. सूर्यशतकम्	मयूरभट्ट
26. भल्लटशतकम्	भल्लट

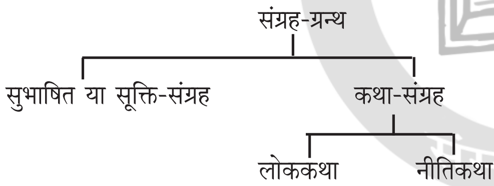
27. **वक्रोक्तिपञ्चाशिका**	रत्नाकर
28. **देवीशतकम्**	आनन्दवर्धन
29. **कुट्टिनीमतम्**	दामोदरगुप्त
30. **बल्लालशतकम्**	बल्लाल
31. **चारुचर्या**	क्षेमेन्द्र
32. **सेव्यसेवकोपदेश**	क्षेमेन्द्र
33. **समयमातृका**	क्षेमेन्द्र
34. **कथाविलास**	क्षेमेन्द्र
35. **दर्पदलन**	क्षेमेन्द्र
36. **पवनदूत**	धोयी
37. **नेमिदूतम्**	विक्रमकवि
38. **शुकसन्देश**	लक्ष्मीदास
39. **भृङ्गसन्देश**	वासुदेव
40. **हंसदूतम्**	रूपगोस्वामी
41. **चन्द्रदूतम्**	विमलकीर्ति

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख स्तोत्रकाव्यम्

1. **शिवताण्डवस्तोत्रम्**	रावण
2. **सौन्दर्यलहरी**	शङ्कराचार्य
3. **चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्**	शङ्कराचार्य
4. **श्रीकृष्णाष्टकम्**	शङ्कराचार्य
5. **आनन्दलहरी**	शङ्कराचार्य
6. **शिवमहिम्नस्तोत्रम्**	पुष्पदन्त
7. **आलबन्दारस्तोत्रम्**	यामुनाचार्य (आलबन्दार)
8. **गङ्गास्तव**	जयदेव
9. **कृष्णकर्णामृतम्**	बिल्वमङ्गल (कृष्णालीलाशुक)
10. **वरदराजस्तव**	अप्पयदीक्षित
11. **नारायणीयम्**	नारायणभट्ट
12. **आनन्दमन्दाकिनी**	मधुसूदन सरस्वती
13. **गन्धर्वप्रार्थनाष्टकम्**	रूपगोस्वामी

कथा साहित्य

संस्कृत साहित्य के इतिहास में हमें दो प्रकार के संग्रह ग्रन्थों का वर्णन प्राप्त होता है-



उद्भव और विकास

➢ कथा का बीज वैदिक वाङ्मय में विस्तृत रूप से मिलता है।
➢ पुरुरवा-उर्वशी, सरमा-पणि आदि संवाद सूक्तों में तात्कालिक कथाओं को संवादों में प्रस्तुत किया गया है।
➢ 'बृहद्देवता' में अनेक देवताओं की कथाएं हैं।
➢ उपनिषदों में भी जीव- जन्तुओं की कथाएं कुछ विशिष्ट उद्देश्य से दी गयी हैं। जैसे- दो हंसों के वार्तालाप ।
➢ महाभारत तथा पुराण- साहित्य तो कथाओं का अक्षय- कोश है।
➢ बौद्ध जातक कथाएं पालि साहित्य में प्रसिद्ध हैं।
➢ जैनों ने भी अपने कथा साहित्य का पर्याप्त विकास किया था।
➢ हरिषेण का '**बृहत्कथाकोश**' जैन सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है।
➢ इसप्रकार कथा का सम्पूर्ण विकास ईसापूर्व में ही हो चुका था।

लोक कथाएँ

➢ संस्कृत का दुर्भाग्य है कि लोक कथाएँ मुख्यतः पैशाची भाषा में लिखित '**गुणाढ्य**' की **बृहत्कथा** (बड्डकहा) पर आश्रित हैं।'

बृहत्कथा

➢ लोक कथाओं का प्राचीनतम संग्रह 'गुणाढ्य' की बृहत्कथा में किया गया था।
➢ बृहत्कथा की भूमिका से पता चलता है कि पहले इसमें सात लाख श्लोक थे किन्तु बाद में केवल एक लाख ही बचे।
➢ वर्तमान समय में बृहत्कथा उपलब्ध नहीं है।
➢ महाभारत की भाँति बृहत्कथा भी उपजीव्य ग्रन्थ है।
➢ बृहत्कथा के उपजीवी ग्रन्थ निम्नलिखित हैं-

1. बृहत्कथाश्लोकसंग्रह

➢ नेपाल के **बुधस्वामी** इसके लेखक हैं।
➢ बृहत्कथा की नेपाली वाचना का एकमात्र प्रतिनिधि ग्रन्थ यही है।
➢ इसके 28 सर्गों में 4539 श्लोक हैं किन्तु यह ग्रन्थ अपूर्ण है।

2. बृहत्कथामञ्जरी

➢ यह **क्षेमेन्द्र** कृत ग्रन्थ है, जो बृहत्कथा का ही संक्षिप्त रूप है, इसमें कथाओं का संग्रह है।

- इसमें 19 अध्याय और 7500 श्लोक हैं।

3. कथासरित्सागर

- इसकी रचना **सोमदेव** ने किया है। यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और विश्वविख्यात है।
- 'यथा नाम तथा गुण' के अनुसार यह वस्तुतः कथाओं का समुद्र है।
- यह 18 लम्भकों तथा 124 तरङ्गों में विभाजित है।
- इसमें 21388 (लगभग बाइस हजार) श्लोक हैं।

4. वेतालपञ्चविंशति

- इसमें भी कथाओं का संकलन है। वेताल और विक्रम से सम्बद्ध 25 शिक्षाप्रद एवं रोचक कथाओं का संग्रह है।
- पञ्चतन्त्र के समान यह भी विश्वसाहित्य बन गया है।
- हिन्दी में इसे **वैतालपचीसी** कहते हैं।

5. सिंहासनद्वात्रिंशिका

- इसे **'द्वात्रिंशत्पुत्तलिका'** या **'विक्रमचरित'** भी कहा गया है।
- इसमें बत्तीस कथाओं के माध्यम से विक्रमादित्य के गुणों का वर्णन किया गया है।
- दक्षिण भारतीय इसे **'विक्रमार्कचरित'** के नाम से जानते हैं।

6. शुकसप्तति

- यह सत्तर कथाओं का रोचक संग्रह- ग्रन्थ है।
- यह भी विश्व- साहित्य में गणनीय है।

अन्य कथा-संग्रह ग्रन्थ

शिवदास- **कथार्णव** (35 कथाएं)

विद्यापति- **पुरुष-परीक्षा** (44 कथाएं)

श्रीवीर- **कथा-कौतुक**

बल्लालसेन- **भोजप्रबन्ध**

नीतिकथाएँ

- नीतिकथाएं हमें नैतिक उपदेश देती हैं।
- इन कथाओं का उपयोग मनुष्य के व्यक्तित्त्व को सुधारने के लिए किया जाता है।
- भारतीय नीतिकथाएँ विश्वभर में अपना स्थान बना चुकी हैं।

1. पञ्चतन्त्र

- यह **विष्णुशर्मा** द्वारा रचित नीतिकथाओं का संग्रह है।
- मूल रूप से यह विलुप्त है।
- इसे अर्थशास्त्र का सार भी कहा जाता है।
- वर्तमान पञ्चतन्त्र में कुल 75 कथाओं का संकलन है, पद्यों की संख्या प्रायः 1100 है।
- पञ्चतन्त्र का मुख्य भाग गद्यात्मक है।
- यह भी विश्व साहित्य की श्रेणी में आता है। इसके 250 संस्करण विश्व की 50 भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

2. हितोपदेश

- पञ्चतन्त्र पर आश्रित नीतिकथाओं में 'हितोपदेश' सर्वाधिक प्रचलित एवं महत्त्वपूर्ण है।
- इसकी रचना **नारायण पण्डित** ने की।
- हितोपदेश चार भागों में विभक्त है, इसमें 39 कथाएं हैं।
- प्रत्येक भाग की एक मुख्य कथा को जोड़ने पर कुल 43 कथाएं हैं।
- इसके पद्यों की संख्या 726 है।

अन्यनीति कथाएँ

बौद्ध तथा जैन कवियों ने अनेक नीतिकथाएं संस्कृत में लिखी हैं जिनमें-

आर्यशूर - **जातकमाला** (34जातक कथाएँ)

सिद्धर्षि (जैन)- **उपमितिभवप्रपञ्चकथा**

हेमविजयगणि- **कथारत्नाकर** (256 कथाएँ)

2. सुभाषित-संग्रह या सूक्ति-संग्रह

- चमत्कारी संस्कृत के सूक्तियों के लेखन एवं संग्रह का प्रयास प्राचीनकाल से होता रहा है।
- इन संग्रहों में मुक्तक पद्यों तथा प्रबन्ध-काव्यों के रमणीय पद्यों का भी संकलन बहुधा मूलकवि के नाम के साथ हुआ है।
- कुछ सूक्ति संग्रहों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है-

1. कवीन्द्रवचनसमुच्चय

- यह कवि **'विद्याकर'** की कृति है। इसे **'सुभाषितरत्नकोष'** भी कहा जाता है।
- यह संस्कृत का प्राचीनतम सूक्ति-संग्रह है।
- इस संग्रह का विभाजन 50 व्रज्याओं में है।

2. सदुक्तिकर्णामृत

- यह **'श्रीधरदास'** की रचना है। यह संग्रह पाँच प्रवाहों में विभक्त है।
- पुनः **'प्रवाह'** वीचियों में विभक्त है। प्रत्येक वीचि में पाँच-पाँच पद्य हैं।
- पूरे संग्रह में 476 वीचियाँ एवं 2380 पद्य हैं।

3. सूक्तिमुक्तावली

- यह **'जल्हण'** द्वारा सङ्कलित है। इसे **'सुभाषितमुक्तावली'**

भी कहते हैं।

➢ इसमें 133 खण्डों में विभाजित 2790 पद्य सङ्कलित हैं।

4. शार्ङ्गधर पद्धति

➢ यह **'शार्ङ्गधर'** कवि की कृति है। यह भाग स्वतन्त्र रूप में प्रयाग से प्रकाशित है।

➢ इसमें 163 परिच्छेद तथा 6300 पद्य थे किन्तु प्रकाशित संस्करण में परिच्छेद उतने ही हैं। केवल पद्य 4689 हो गये।

5. सुभाषितावली

➢ इसके सङ्कलनकर्ता **'वल्लभदेव'** हैं।

➢ इस सूक्ति संग्रह में 101 पद्धतियों में 3527 पद्य सङ्कलित हैं।

6. पद्यावली- रूपगोस्वामी (386 पद्य)

7. सूक्तिमुक्तावली- सोमप्रभाचार्य

8. सुभाषित-नीवी- वेदान्त देशिक

9. सुभाषितरत्न-सन्दोह- अमितगति

10. सुभाषित- सुधानिधि तथा **पुरुषार्थसुधानिधि-** सायणाचार्य

➢ सूक्ति ग्रन्थों में **'सुभाषितरत्नभाण्डागार'** सबसे बड़ा है। इसमें 10000 (दस हजार) से अधिक पद्य हैं।

कथासाहित्यम्

कथाग्रन्थः	लेखकः
1. पञ्चतन्त्रम्	विष्णुशर्मा
2. हितोपदेश	नारायणपण्डित
3. बृहत्कथा	गुणाढ्य
4. बृहत्कथाश्लोकसंग्रह	बुधस्वामी
5. बृहत्कथामञ्जरी	क्षेमेन्द्र
6. कथासरित्सागर	सोमदेव
7. वेतालपञ्चविंशतिका	शिवदास एवं जम्भलदत्त
8. सिंहासनद्वात्रिंशिका	लेखक का नाम अज्ञात
द्वात्रिंशत्पुत्तलिका	
विक्रमचरित	
विक्रमार्कचरित	
9. शुकसप्ततिः	अज्ञात
10. पुरुषपरीक्षा	विद्यापति
11. भोजप्रबन्ध	बल्लालसेन
12. जातकमाला	आर्यशूर
13. प्रबन्धकोष	राजशेखर
14. उदयसुन्दरीकथा	सोड्ढल

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार

1. नाट्यशास्त्र	आचार्य भरत	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
2. काव्यालङ्कार	भामह	500 ई.
3. काव्यादर्श	दण्डी	सातवीं शताब्दी
4. काव्यालङ्कारसारसंग्रह	उद्भट	अष्टमशताब्दी का उत्तरार्द्ध
5. काव्यालङ्कार सूत्र	वामन	800-850 ई. लगभग
6. काव्यालङ्कार	रुद्रट	नवम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	नवम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
8. काव्यमीमांसा	राजशेखर	दशम शताब्दी
9. अभिधावृत्तमात्रिका	मुकुलभट्ट	दशम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
10. काव्यकौतुक	भट्टतौत	दशम शताब्दी का मध्य
11. दशरूपक	धनञ्जय और धनिक	दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
12. (i) अभिनवभारती ('नाट्यशास्त्र' की टीका)	अभिनवगुप्त	एकादश शताब्दी
(ii) ध्वन्यालोकलोचन ('ध्वन्यालोक' की टीका)	अभिनवगुप्त	
(ii) 'काव्यकौतुकविवरण ('काव्यकौतुक' का विवरण)	अभिनवगुप्त	
13. वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	एकादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध
14. व्यक्तिविवेक	महिमभट्ट	एकादश शताब्दी का मध्य
15. (i) सरस्वतीकण्ठाभरण	भोजराज	एकादशशताब्दी 1050 ई. लगभग
(ii) शृङ्गारप्रकाश	भोजराज	
16. (i) औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	एकादशशताब्दी का उत्तरार्द्ध
(ii) कविकण्ठाभरण	क्षेमेन्द्र	
17. नाटकलक्षणरत्नकोष	सागरनन्दी	एकादश शताब्दी

18. काव्यप्रकाश	मम्मट	1050 ई. (एकादश शताब्दी का उत्तरार्द्ध)
19. अलङ्कारसर्वस्व	रुय्यक	द्वादशशताब्दी
20. वाग्भटालङ्कार	वाग्भट्ट	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
21. काव्यानुशासन	हेमचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
22. नाट्यदर्पण	रामचन्द्र गुणचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
23. भावप्रकाशन	शारदातनय	तेरहवीं शताब्दी
24. चन्द्रालोक	पीयूषवर्ष जयदेव	तेरहवीं शताब्दी का मध्यभाग
25. साहित्यदर्पण	विश्वनाथ कविराज	14वीं शताब्दी
26. एकावली	विद्याधर	1285 ई. से 1325 ई. के मध्य
27. (i) कुवलयानन्द	अप्पयदीक्षित	षोडशशताब्दी
(ii) चित्रमीमांसा	अप्पयदीक्षित	
(iii) वृत्तवार्तिक	अप्पयदीक्षित	
28. रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	17वीं शताब्दी का मध्यभाग

सुभाषितग्रन्थाः

सुभाषितग्रन्थाः	ग्रन्थकारः
1. कवीन्द्रवचनसमुच्चयः	विद्याकरपण्डितः
2. सदुक्तिकर्णामृतम् (सूक्तिकर्णामृतम्)	श्रीधरदास
3. सूक्तिमुक्तावली (सुभाषितमुक्तावली)	सिद्धचन्द्रमणि
4. सूक्तिरत्नाकरः	सिद्धचन्द्रमणि
5. सुभाषित सुधानिधि	सायण
6. शार्ङ्गधरपद्धति	शार्ङ्गधर
7. सुभाषितरत्नभाण्डागार	शिवदत्त एवं नारायणराम आचार्य
8. सूक्तिमुक्तावली	डॉ. नरेन्द्रदेव शास्त्री
9. संस्कृतसूक्तिरत्नाकर	डॉ. रामजी उपाध्याय

ऐतिहासिक काव्य

ऐतिहासिक काव्य	लेखक
1. बुद्धचरितम्	अश्वघोष
2. हर्षचरितम्	बाणभट्ट
3. गउडवहो (गौडवधः)	वाक्पतिराज
4. नवसाहसाङ्कचरितम्	पद्मगुप्त (परिमल)
5. विक्रमाङ्कदेवचरितम्	बिल्हण
6. राजतरङ्गिणी	महाकवि कल्हण
7. सोमपालविजयम्	जल्हण
8. प्रबन्धकोष	राजशेखर
9. वेमभूपालचरितम्	वामनभट्ट बाण

चम्पूकाव्य

चम्पूकाव्य	लेखक
1. नलचम्पू (दमयन्तीकथा)	त्रिविक्रमभट्ट
2. मदालसाचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट
3. जीवन्धरचम्पू	हरिश्चन्द्र
4. यशस्तिलकचम्पू	सोमदेवसूरि
5. रामायणचम्पू	राजाभोज (भोजराज)
6. भागवतचम्पू	अभिनवकालिदास
7. भारतचम्पू	अनन्तभट्ट
8. वरदाम्बिकापरिणयचम्पू	रानी तिरुमलाम्बा
9. भरतेश्वराभ्युदयचम्पू	पं. आशाधरसूरि
10. रुक्मिणीपरिणयचम्पू	अमलाचार्य (अम्मल)
11. आनन्दवृन्दावनचम्पू	कवि कर्णपूर

संस्कृत कवियों के माता-पिता

कवि	पिता माता	अन्य
1. **बाणभट्ट**	चित्रभानु–राजदेवी	पितामह-**अर्थपति**
2. **भवभूति**	नीलकण्ठ–जतुकर्णी (जातुकर्णी)	(पितामह–**भट्टगोपाल**)
3. **भारवि**	श्रीधर (नारायणस्वामी)-सुशीला	
4. **माघ**	दत्तक (सर्वाश्रय)-ब्राह्मी	(पितामह–**सुप्रभदेव**)
5. **श्रीहर्ष**	श्रीहीर–मामल्लदेवी	
6. **विशाखदत्त**	पृथु (भास्करदत्त)	(पितामह–**वटेश्वरदत्त**)
7. **हर्षवर्धन**	प्रभाकरवर्धन–यशोवती	(बड़े भाई–**राज्यवर्धन**, बहन – **राज्यश्री**)
8. **राजशेखर**	दर्दुक (दुहिक) शीलवती	**अकालजलद** (पितामह)
9. **अम्बिकादत्तव्यास**	दुर्गादत्त	पितामह - श्रीराजाराम
10. **जयदेव (गीतगोविन्दकार)**	भोजदेव–रामादेवी (राधादेवी)	
11. **पण्डितराजजगन्नाथ**	पेरुभट्ट–लक्ष्मीदेवी	
12. **कल्हण**	चम्पक	
13. **त्रिविक्रमभट्ट**	देवादित्य (नेमादित्य)	पितामह-**श्रीधर**
14. **पाणिनि**	पणिन्–दाक्षी	
15. **कात्यायन (वररुचि)**	–	पितामह-**याज्ञवल्क्य**
16. **मम्मट**	जैयट	भाई-**कैय्यट (उव्वट)**
17. **विश्वनाथ**	चन्द्रशेखर	
18. **भर्तृहरि**	गन्धर्वसेन	
19. **अश्वघोष**	सुवर्णाक्षी (माता)	
20. **पतञ्जलि**	गोणिका (माता)	
21. **कालिदास**	शारदानन्द (श्वसुर, विद्योत्तमा के पिता)	
22. **मुरारि**	श्रीवर्धमानभट्ट/तन्तुमती	
23. **भट्टोजिदीक्षित**	लक्ष्मीधर	
24. **वरदराज**	दुर्गातनय	
25. **रत्नाकर**	अमृतभानु	
26. **जयदेव (प्रसन्नराघवकार)**	महादेव–सुमित्रा	
27. **विश्वेश्वर पाण्डेय**	लक्ष्मीधर पाण्डेय	
28. **पण्डिता क्षमाराव**	श्री शङ्करपाण्डुरङ्ग	
29. **दण्डी (भारवि के प्रपौत्र)**	वीरदत्त–गौरी	प्रपितामह–**भारवि**
30. **वेदव्यास**	सत्यवती	

कवियों की उपाधियाँ/उपनाम

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
1.	वाल्मीकि	आदिकवि
2.	कृष्णद्वैपायन	व्यास या वेदव्यास
3.	कालिदास	(i) दीपशिखा (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनी विलास (v) उपमासम्राट्
4.	अम्बिकादत्तव्यास	(i) घटिकाशतक (ii) सुकवि (iii) शतावधान (iv) अभिनवबाण (v) भारतरत्न
5.	बाणभट्ट	(i) पञ्चबाणस्तु बाणः (ii) बाणस्तु पञ्चाननः (iii) कविताकानन केसरी (iv) वश्यवाणीचक्रवर्ती (v) गद्यसम्राट् (vi) वाणी बाणो बभूव (vii) कविताकामिनीकौतुक (viii) तुरङ्गबाण (ix) गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति (x) बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् (xi) बाणःकवीनामिह चक्रवर्ती (xii) महानयं भुजङ्गः (xiii) सर्वेश्वर
6.	जयदेव (प्रसन्नराघव एवं 'चन्द्रालोक' के लेखक)	(i) पीयूषवर्ष (ii) कवीन्द्र (iii) वाणी का विलास (iv) असमरसनिष्यन्दमधुर
7.	मल्लिनाथ	(i) कोलाचल (ii) महामहोपाध्याय
8.	त्रिविक्रमभट्ट	यमुनात्रिविक्रम
9.	विश्वनाथ	(i) सन्धिविग्राहक, (ii) अष्टादशभाषा वारविलासिनी (iii) कविराज (iv) कवि सूक्ति रत्नाकर
10.	जगन्नाथ	पण्डितराज
11.	भारवि	(i) आतपत्र (ii) दामोदर (उपनाम) (iii) चक्रकवि
12.	माघ	(i) घण्टामाघ (ii) सर्वाश्रय
13.	भवभूति	(i) श्रीकण्ठ (भट्टश्रीकण्ठ) (ii) पदवाक्यप्रमाणज्ञ (iii) श्रीकण्ठपदलाञ्छनः (iv) उम्बेक/उदम्बर (v) वश्यवाक् (vi) शिखरिणीकवि (vii) परिणतप्रज्ञ
14.	भट्टनारायण	(i) भट्ट (ii) मृगराज (iii) कवि मृगेन्द्र/कवीन्द्र
15.	मम्मट	(i) वाग्देवतावतार (ii) राजानक (iii) ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य
16.	आनन्दवर्धन	(i) राजानक (ii) ध्वनिप्रतिष्ठापकाचार्य (iii) सहृदय शिरोमणि
17.	कुन्तक	'राजानक' (यह उपाधि काश्मीरी विद्वानों को सम्मानार्थ मिलती थी)
18.	महिमभट्ट	'राजानक'
19.	रुय्यक	'राजानक'
20.	क्षेमेन्द्र	(i) जनकवि (ii) सकलमनीषिशिष्य
21.	भास	(i) कविताकामिनी हास (ii) भासो हासः (iii) अग्निमित्र (ज्वलनमित्र)
22.	अश्वघोष	(i) आर्यभदन्त (ii) बौद्धभिक्षु
23.	मुरारि	(i) बालवाल्मीकि (ii) महाकवि (iii) इन्दु
24.	बिल्हण	विद्यापति
25.	हेमचन्द्र	कलिकालसर्वज्ञ
26.	अभिनवगुप्त	(i) लोचनकार (ii) परम- माहेश्वराचार्य
27.	कणाद	(i) उलूक (ii) कणभुक्
28.	कात्यायन	वररुचि
29.	गौतम	अक्षपाद

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
30.	**दयानन्द सरस्वती**	स्वामी
31.	**भट्टि**	
32.	**मातृचेट**	बौद्धकवि
33.	**यामुनाचार्य**	आलवन्दार
34.	**राजशेखर**	(i) यायावर (ii) कविराज (iii) बालकवि
35.	**वाचस्पतिमिश्र**	(i) सर्वतन्त्रस्वतन्त्र (ii) तात्पर्याचार्य
36.	**वात्स्यायन**	मल्लनाग
37.	**विद्यापति**	(i) षट्तर्कषण्मुख (ii) वादिराज सूरि (iii) मैथिलकोकिल
38.	**विद्यारण्यमुनि**	माधवाचार्य
39.	**क्षमाराव**	पण्डिता
40.	**पतञ्जलि**	शेषनाग, फणिभृत, नागनाथ, भगवान्, तीर्थदर्शी
41.	**प्रभाकर मिश्र**	(i) गौडमीमांसक (ii) गुरु
42.	**माधवभट्ट**	(i) कविराज (ii) सूरि (iii) पण्डित
43.	**हर्षवर्धन**	(i) राजा (ii) कवीन्द्र (iii) गीर्हर्ष (iv) कविता का हर्ष (v) अनङ्ग
44.	**जयदेव (गीतगोविन्दकार)**	कविराजराज
45.	**श्रीहर्ष**	कविताकामिनी का हर्ष
46.	**आनन्दराय मखी**	वेदकवि
47.	**रत्नाकर**	(i) कांस्यताल, (ii) वागीश्वर
48.	**शेषाचलपति**	आन्ध्रपाणिनि
49.	**आर्यभट्ट**	अश्मकाचार्य
50.	**मङ्ख**	कर्णिकार
51.	**शाकटायन**	आदिशाब्दिक
52.	**पद्मगुप्त**	परिमल कालिदास
53.	**द्वादशाविद्यापति**	वदिराज सूरि
54.	**प्रसन्नराघवकार जयदेव**	पीयूषवर्ष
55.	**दिंगनागाचार्य**	तर्कपुंगव
56.	**मुकुलभट्ट**	(i) साहित्यमुरारि (ii) पदवाक्य-प्रमाण-पारावारपारीण
57.	**ब्रह्मगुप्त**	गणकचक्रचूडामणि
58.	**श्रीनिवासदीक्षित**	(i) रत्नखेट (ii) षड्भाषाचतुर
59.	**सोमदेव सूरि**	(i) कविकुलराजकुञ्जर (ii) तार्किक चक्रवर्ती
60.	**धनपाल**	सरस्वती
61.	**वस्तुपाल**	लघुभोजराज
62.	**शान्तिसूरि**	वादिवेताल
63.	**हृषिकेशभट्टाचार्य**	अभिनवबाण

कवियों का निवासस्थान (जन्मस्थान)

कवि	निवासस्थान (जन्मस्थान)
1. कालिदास	उज्जयिनी (काश्मीर/बंगाल)
2. बाणभट्ट	'प्रीतिकूट' (शोणनदी के पश्चिमी तट पर आधुनिक–'शाहाबाद')
3. भारवि	अचलपुर (दाक्षिणात्य/धारानगरी)
4. अम्बिकादत्त व्यास	जयपुर राजस्थान, ग्राम-रावतजी का धुला (अध्ययन–काशी में)
5. कल्हण	काश्मीर
6. पाणिनि	शालातुर ग्राम (अटक)
7. पतञ्जलि	गोनर्द (गोण्डा)
8. दण्डी	दक्षिण में विदर्भ (महाराष्ट्र)
9. भवभूति	पद्मपुर (दक्षिणभारत)
10. अश्वघोष	साकेत (अयोध्या)
11. माघ	श्री भिन्नमाल 'भीनमाल' राजस्थान (आबूपर्वत तथा लूनानदी के बीच स्थित)
12. श्रीहर्ष	कन्नौज
13. भट्टि	बल्लभी
14. कुमारदास	श्रीलङ्का
15. शूद्रक	दाक्षिणात्य
16. हर्ष	स्थाणीश्वर (थानेश्वर)
17. भट्टनारायण	कान्यकुब्ज (कन्नौज)
18. राजशेखर	महाराष्ट्र (विदर्भ)
19. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	विदर्भप्रान्त-कुण्डिननगर
20. सुबन्धु	काश्मीर
21. पण्डितराज जगन्नाथ	आन्ध्रप्रदेश (तैलंग)
22. कात्यायन	दाक्षिणात्य
23. आनन्दवर्धन	काश्मीर
24. मम्मट	काश्मीर
25. अभिनवगुप्त	काश्मीर
26. भर्तृहरि	मालवा
27. क्षेमेन्द्र	काश्मीर
28. महिमभट्ट	काश्मीर
29. वाचस्पतिमिश्र	मिथिला (बिहार)
30. विश्वनाथ कविराज	उत्कल (उड़ीसा)
31. त्रिविक्रमभट्ट	मान्यखेट ग्राम (हैदराबाद)
32. रत्नाकर	काश्मीर
33. विश्वेश्वर पाण्डेय	अल्मोडा जिला ग्राम–पटिया
34. अमरुक	काश्मीर
35. गीतगोविन्दकार जयदेव	बंगाल के केन्दुबिल्व नामक ग्राम।
36. सोमदेव (कथासरित्सागर)	काश्मीर

संस्कृत के प्रमुख कवियों, नायकों, तथा ऋषियों का गोत्र एवं वंश

कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति	कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति
1. बाणभट्ट	वत्स/वात्स्यायन	12. दुष्यन्त	पुरुवंशी (चन्द्रवंशी)
2. भवभूति	काश्यप	13. राम	सूर्यवंश/इक्ष्वाकुवंश/रघुवंश
3. भारवि	कुशिक	14. दुर्योधन	कुरुवंशी/चन्द्रवंशी
4. कालिदास	ब्राह्मण जाति	15. शिवाजी	मराठा वंश
5. अम्बिकादत्त व्यास	पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी ब्राह्मण त्रिप्रवर 'भीडा' वंश	16. कुतुबुद्दीन	गुलामवंश
6. विश्वेश्वर पाण्डेय	भारद्वाजगोत्र	17. औरङ्गजेब	मुगलवंश
7. मुरारि	मौद्गल्यगोत्र	18. सिंहविष्णु	पल्लववंश
8. भट्टनारायण	सारस्वत ब्राह्मण	19. नरसिंहवर्मन्	पल्लववंश
9. राजशेखर	यायावर क्षत्रियवंश	20. विष्णुवर्धन	चालुक्यवंश
10. पण्डितराजजगन्नाथ	तैलङ्गब्राह्मण	21. दुर्विनीत	गङ्गवंश
11. विश्वामित्र	कौशिक	22. यशोवर्मा	चन्देलवंश

कवियों का सम्प्रदाय

कवि	सम्प्रदाय	कवि	सम्प्रदाय
1. कालिदास	शैव	8. कल्हण	शैव
2. भवभूति	शैव	9. अभिनवगुप्त	शैव
3. भारवि	शैव	10. भट्टनारायण	वैष्णव (साथ में शिवभक्त भी)
4. माघ	वैष्णव	11. रूपगोस्वामी	वैष्णव
5. भर्तृहरि	शैव, ब्रह्म के उपासक	12. विश्वनाथकविराज	वैष्णव
6. बाणभट्ट	शैव	13. राजशेखर	शैव
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैष्णव (शैव)	14. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	वैष्णव

संस्कृत कवियों का राज्याश्रय

राजकवि	राजा
1. कालिदास	विक्रमादित्य
2. बाणभट्ट	सम्राट् हर्षवर्धन
3. भारवि	पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन
4. भवभूति	यशोवर्मा
5. दण्डी	नरसिंह वर्मन प्रथम, पल्लवनरेश सिंहविष्णु
6. 'परिमलकालिदास' या पद्मगुप्त	राजा मुञ्ज और सिन्धुराज (नवसाहसाङ्क)
7. रविकीर्ति	पुलकेशिन द्वितीय
8. उद्भट	काश्मीरनरेश जयादित्य
9. वामन	काश्मीर नरेश जयादित्य के मन्त्री

10. आनन्दवर्धन	काश्मीर नरेश अवन्तिवर्मा
11. राजशेखर	कन्नौज के शासक महेन्द्रपाल और महीपाल
12. धनञ्जय	मालव के परमारवंशी राजा मुञ्ज (वाक्पतिराज)
13. क्षेमेन्द्र	कश्मीर नरेश अनन्तराज
14. नारायण पण्डित	धवलचन्द्र (बंगाल के कोई राजा)
15. श्रीहर्ष (नैषधकार)	कन्नौज नरेश जयचन्द्र
16. अश्वघोष	कनिष्क
17. वाक्पतिराज	यशोवर्मा
18. भट्टि	वल्लभी के राजा श्रीधरसेन
19. रत्नाकर	राजा चिप्पट जयापीड
20. कविराज (माधवभट्ट)	जयन्तपुरी के कदम्बराजा कामदेव
21. कृष्णमिश्र	चन्देलराजा कीर्तिवर्मा
22. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन
23. पण्डितराजजगन्नाथ	शाहजहाँ
24. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	महिलारोप्य के राजा अमरसिंह
25. नारायण पण्डित (हितोपदेश)	बंगाल के राजा धवलचन्द्र
26. सोमदेव (कथा सरित्सागर)	काश्मीरी राजा अनन्त
27. हरिषेण	समुद्रगुप्त

कवियों के प्रिय रस

कवि	प्रिय रस	कवि	प्रिय रस
1. कालिदास	शृङ्गार रस	**5. बाणभट्ट**	शृङ्गाररस
2. भवभूति	करुण रस	**6. श्रीहर्ष**	शृङ्गाररस
3. भारवि	वीररस, शृङ्गाररस	**7. भास**	शृङ्गार और वीररस
4. माघ	वीररस	**8. अमरुक**	शृङ्गाररस
		9. जयदेव	शृङ्गाररस

कवियों के प्रिय छन्द

कवि	प्रिय छन्द	अतिप्रिय छन्दों की संख्या
1. वाल्मीकि	अनुष्टुप् (श्लोक)	–
2. व्यास	अनुष्टुप्	–
3. कालिदास	आर्या, अनुष्टुप्, उपजाति, मन्दाक्रान्ता	06
4. अश्वघोष	अनुष्टुप्, उपजाति	–
5. भारवि	वंशस्थ, उपजाति	12
6. माघ	वंशस्थ, अनुष्टुप्	16
7. श्रीहर्ष	उपजाति छन्द	19
8. भट्टि	अनुष्टुप्, उपजाति	–

9. भास	अनुष्टुप्, वसन्ततिलका	कुल 24 छन्दों का प्रयोग
10. विशाखदत्त	शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी, स्रग्धरा	–
11. हर्षवर्धन	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, अनुष्टुप्, आर्या	–
12. भट्टनारायण	अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित	–
13. भवभूति	अनुष्टुप्, शिखरिणी	–
14. राजशेखर	शार्दूलविक्रीडितम्	–
15. कृष्णमिश्र	वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडितम्	–
16. जयदेव	वसन्ततिलका	–
17. अमरुक	शार्दूलविक्रीडितम्	–
18. भर्तृहरि	शार्दूलविक्रीडितम्	

कवियों के प्रिय अलङ्कार

1. कालिदास	उपमा
2. भारवि	चित्रालङ्कार, अर्थालङ्कार
3. माघ	उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, चित्रालङ्कार
4. श्रीहर्ष	उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, श्लेष, अनुप्रास, यमक
5. अश्वघोष	उपमा, रूपक, अनुप्रास
6. भवभूति	उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक
7. रत्नाकर	उत्प्रेक्षा अलङ्कार
8. विशाखदत्त	उपमा, रूपक, श्लेष
9. हर्षवर्धन	उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक
10. भट्टनारायण	उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा
11. सुबन्धु	श्लेष, विरोधाभास, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा।
12. बाणभट्ट	विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक
13. अम्बिकादत्तव्यास	विरोधाभास

कवियों की प्रिय शैली रीति एवं गुण

कवि	**रीति एवं गुण**
1. भारवि	रीतिवादी या अलङ्कृत काव्यशैली के जन्मदाता
2. माघ	प्रसाद, माधुर्य एवं ओजगुणों का समन्वय
3. श्रीहर्ष	वैदर्भी एवं गौडीरीति, प्रसाद एवं ओजगुण
4. कालिदास	वैदर्भी, प्रसादगुण
5. बाणभट्ट	पाञ्चाली, ओज, माधुर्य, प्रसाद
6. दण्डी	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैदर्भी और गौडी रीति का समन्वय।
8. सुबन्धु	गौडीरीति, ओजगुण (श्लेष अलंकार का प्रयोग)
9. भवभूति	गौडी एवं वैदर्भी रीति (i) मालतीमाधवम् और महावीरचरितम् में–गौडी रीति, ओजगुण (ii) उत्तररामचरितम् में–गौडी एवं वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण

10. शूद्रक	वैदर्भीरीति एवं प्रसादगुण (कहीं कहीं 'गौडी रीति' भी)
11. अश्वघोष	वैदर्भीरीति, प्रसादगुण
12. भास	वैदर्भी रीति, प्रसाद, माधुर्य
13. मुरारि	गौडीरीति–ओजगुण
14. भट्टि	व्याकरणमूलक काव्यशैली की एक नवीन विधा के जन्मदाता।
15. कुमारदास	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
16. रत्नाकर	रीतिवादी कवि
17. विशाखदत्त	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
18. हर्षवर्धन	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्य गुण
19. भट्टनारायण	गौडीरीति एवं ओजगुण
20. राजशेखर	गौडीरीति (यत्र तत्र पाञ्चाली भी)
21. दिङ्नाग (धीरनाग, वीरनाग)	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
22. पण्डिता क्षमाराव	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
23. भर्तृहरि	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
24. अमरुक	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
25. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण

संस्कृतकवियों की प्रसिद्धि का कारण

कवि	कविप्रसिद्धि
1. कालिदास	(i) उपमा (ii) वैदर्भीरीति
2. भारवि	(i) अर्थगौरव, (ii) अलङ्कृतकाव्यशैली के जनक
3. दण्डी	पदलालित्य
4. माघ	उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य तीनों के लिए
5. भवभूति	करुणरस के प्रयोक्ता
6. अम्बिकादत्तव्यास	ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता
7. बाणभट्ट	(i) अलङ्कार एवं समास बहुल रचना (ii) कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा (ii) पाञ्चाली रीति,
8. त्रिविक्रमभट्ट	(i) श्लेष अलङ्कार के प्रचुर प्रयोक्ता (ii) चम्पूकाव्य के आद्यप्रणेता
9. सुबन्धु	श्लेष प्रधानशैली के प्रयोक्ता

संस्कृतसाहित्य के प्रमुख दम्पती, प्रेमी-प्रेमिका एवं उनकी सन्तानें

पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री	पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री
1. अगस्त्य	लोपामुद्रा		**26. धृतराष्ट्र**	गान्धारी	दुर्योधन
2. वशिष्ठ	अरुन्धती		**27. पाण्डु**	कुन्ती/माद्री	पञ्चपाण्डव
3. विश्वामित्र	मेनका	शकुन्तला	**28. कृष्ण**	रुक्मिणी/सत्यभामा	प्रद्युम्न
4. मारीच	अदिति (दाक्षायणी)	इन्द्र	**29. शर्विलक**	मदनिका	
5. ययाति	शर्मिष्ठा, देवयानी	पुरु	**30. अग्निमित्र**	मालविका	
6. अत्रि	अनसूया	दुर्वासा	**31. उदयन**	रत्नावली (सागरिका)	
7. इन्द्र	इन्द्राणी/शची/पौलोमी	जयन्त	**32. उदयन**	वासवदत्ता	
8. ऋष्यशृङ्ग	शान्ता		**33. माधव**	मालती	
9. दुष्यन्त	शकुन्तला, हंसपदिका,	भरत	**34. मकरन्द**	मदयन्तिका	
	वसुमती	(सर्वदमन)	**35. तारापीड**	विलासवती	चन्द्रापीड
10. कालिदास	विद्योत्तमा	–	**36. चन्द्रापीड**	कादम्बरी	
11. भर्तृहरि	पिङ्गला	–	**37. पुण्डरीक**	महाश्वेता	
12. भारवि	रसिकवती/रसिका	मनोरथ	**38. हंस**	गौरी	महाश्वेता
13. पण्डितराजजगन्नाथ	(i) लवङ्गी (यवनी प्रेमिका)		**39. चित्ररथ**	मदिरा	कादम्बरी
	(ii) भामिनी (पत्नी)		**40. श्वेतकेतु**	लक्ष्मी	पुण्डरीक
14. राम	सीता	कुश-लव	**41. हेममाली** (यक्ष)	विशालाक्षी (यक्षिणी)	
15. लक्ष्मण	उर्मिला	चन्द्रकेतु	**42. कवि जयदेव**	पद्मावती	
16. भरत	माण्डवी	पुष्कल	(गीतगोविन्दकार)		
17. शत्रुघ्न	श्रुतिकीर्ति		**43. राजा दिलीप**	सुदक्षिणा	रघु
18. नल	दमयन्ती		**44. अज**	इन्दुमती	दशरथ
19. पुरूरवा	उर्वशी		**45. कामदेव**	रति	
20. चारुदत्त	धूता/वसन्तसेना	रोहसेन	**46. शिव**	पार्वती	गणेश, कार्तिकिय
21. नन्द		सुन्दरी	**47. विष्णु**	लक्ष्मी	
22. अविमारक	कुरङ्गी		**48. अभिमन्यु**	उत्तरा	परीक्षित
23. भीम	हिडिम्बा	घटोत्कच	**49. हिमालय**	मैना	पार्वती
24. पञ्चपाण्डव	द्रौपदी		**50. शुकनास**	मनोरमा	वैशम्पायन
25. अर्जुन	सुभद्रा	अभिमन्यु	**51. राजशेखर**	अवन्तिसुन्दरी	
			53. गौतम	अहल्या	शतानन्द
			54. याज्ञवल्क्य	मैत्रेयी	

संस्कृतवाङ्मय में गुरु-शिष्य-परम्परा

शिष्य	गुरु	शिष्य	गुरु
1. जनक	याज्ञवल्क्य, शतानन्द (पुरोहित)	23. महेन्द्रपाल	राजशेखर
2. भर्तृहरि	गोरखनाथ/वसुरात (बौद्धमत में)	24. अभिनवगुप्त	भट्टतौत
3. भवभूति	ज्ञाननिधि	25. प्रतिहारेन्दुराज	मुकुलभट्ट
4. वरदराज	भट्टोजिदीक्षित	26. एकलव्य	द्रोणाचार्य
5. भट्टोजिदीक्षित	शेषकृष्ण	27. शार्ङ्गरव, शारद्वत	कण्व
6. तुलसीदास	नरहर्यानन्द	28. गालव	मारीच
7. राम	वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य	29. कर्ण	परशुराम
8. श्रीकृष्ण	सान्दीपनी	30. भीष्मपितामह	परशुराम
9. चन्द्रगुप्त	चाणक्य	31. दुर्योधनादि (कौरवों के)	द्रोणाचार्य
10. देवताओं के	बृहस्पति	32. चन्द्रापीड	शुकनाश (उपदेष्टा)
11. असुरों के	शुक्राचार्य	33. जैमिनि	पराशर
12. लव, कुश, सौधातकि, दण्डायन	वाल्मीकि	34. पराशर	व्यास
		35. मण्डनमिश्र	कुमारिलभट्ट
13. दुष्यन्त	सोमरात (पुरोहित)	36. उम्बेक (भवभूति)	कुमारिलभट्ट
14. पाणिनि	वर्ष (उपवर्ष)	37. प्रभाकरमिश्र	कुमारिलभट्ट
15. मंखक	रुय्यक	38. शालिकनाथ	प्रभाकरमिश्र
16. दाराशिकोह	पण्डितराज जगन्नाथ (संस्कृतशिक्षक)	39. आसुरि	कपिलमुनि
17. बाणभट्ट	भर्वु	40. पञ्चशिख	आसुरि
18. शिवाजी	समर्थगुरुरामदास, कोण्डदेव	41. हस्तामलक	शङ्कराचार्य
19. कनिष्क	अश्वघोष	42. योगीन्द्र सदानन्द	अद्वयानन्द
20. अम्बिकादत्तव्यास	विश्वक्सेन	43. अरस्तू	प्लेटो
21. अर्जुन (पञ्चपाण्डव)	द्रोणाचार्य	44. प्लेटो	सुकरात
22. शङ्कराचार्य	आचार्य गौडपाद	45. सिकन्दर	अरस्तू
		46. नागेशभट्ट	हरिदीक्षित

संस्कृतवाङ्मय में वर्णित राजा और राजधानी

राजा	राजधानी	राजा	राजधानी
1. शूद्रक	विदिशा ('वेत्रवती' नदी के किनारे)	2. तारापीड	उज्जयिनी
3. दुष्यन्त	हस्तिनापुर	4. राम	अयोध्या (सरयूनदी के किनारे)
5. रावण	लङ्का ('समुद्र' तट पर)	6. नल	निषधदेश
7. कृष्ण	द्वारिका (समुद्र के किनारे)	8. शिवाजी	सतारा/रायगढ़
9. दुर्योधन (सुयोधन)	हस्तिनापुर	10. युधिष्ठिर	इन्द्रप्रस्थ/हस्तिनापुर
11. पुरु	हस्तिनापुर	12. प्रद्योत	उज्जयिनी
13. कुबेर	अलकापुरी	14. उदयन	कौशाम्बी/उज्जयिनी
15. भर्तृहरि	धारानगरी	16. विक्रमादित्य	उज्जयिनी

17. दुर्विनीत	कोंकण	**18. राजाभोज**	धारानगरी
19. हर्षवर्धन	थाणेश्वर	**20. जयचन्द्र**	कन्नौज
21. पृथ्वीराज	दिल्ली	**22. महमूदगजनवी**	गजनी
23. मुहम्मद गोरी	गोरदेश	**24. औरङ्गजेब**	दिल्ली
25. रन्तिदेव	दशपुर		

संस्कृत में वर्णित कुछ प्रसिद्ध आश्रम एवं नगर

आश्रम/नगर	नदी/पर्वत	आश्रम/नगर	नदी/पर्वत
1. कण्व आश्रम	मालिनी नदी	**8. जाबालि आश्रम**	पम्पासरोवर
2. विश्वामित्र आश्रम	गौतमी नदी	**9. महाश्वेता आश्रम**	अच्छोदसरोवर
3. वाल्मीकि आश्रम	गङ्गानदी/तमसानदी	**10. विदिशा**	वेत्रवती (बेतवा)
4. भारद्वाज आश्रम	प्रयाग का सङ्गमतट	**11. उज्जयिनी**	क्षिप्रा नदी
5. अगस्त्य आश्रम	गोदावरी/दण्डकवन	**12. शचीतीर्थ (अप्सरातीर्थ)**	गङ्गा नदी
6. मारीच आश्रम	हेमकूटपर्वत	**13. अयोध्या**	सरयू नदी
7. यक्ष का निवास	रामगिरिपर्वत (चित्रकूट)	**14. हरिद्वार (कनखल)**	गङ्गा नदी

संस्कृत ग्रन्थों का मङ्गलाचरण

रचना	मङ्गलाचरण/(छन्द)	देवता	प्रकार
1. रघुवंशम्	**वागर्थाविव सम्पृक्तौ......।** (अनुष्टुप्)	शिव-पार्वती	नमस्कारात्मक
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	**या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या.....।** (स्त्रग्धरा)	अष्टमूर्तिशिव	आशीर्वादात्मक
3. किरातार्जुनीयम्	**श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीम्** (वंशस्थ)	लक्ष्मी	वस्तुनिर्देशात्मक
4. शिशुपालवधम्	**श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्...।** (वंशस्थ)	लक्ष्मी	वस्तुनिर्देशात्मक
5. नैषधीयचरितम्	**निपीय यस्य (वंशस्थ)**	–	वस्तुनिर्देशात्मक
6. मेघदूतम्	**कश्चित् कान्ता विरह गुरुणा....**(मन्दाक्रान्ता)	–	वस्तुनिर्देशात्मक
7. उत्तररामचरितम्	**इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमो वाकं प्रशास्महे** (अनुष्टुप्)	पूर्ववर्ती वाल्मीकि आदिकवि वाल्मीकि	नमस्कारात्मक
8. शिवराजविजयम्	**विष्णोर्माया भगवती..... (भा.)**	विष्णु	नमस्कारात्मक तथा वस्तुनिर्देशात्मक
9. कादम्बरी कथा	**रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये....।** (वंशस्थ)	ब्रह्म, विष्णु, शिव रूपी परब्रह्म की	नमस्कारात्मक
10. नीतिशतकम्	**दिक्कालाद्यनवच्छिन्ना.....।** (अनुष्टुप्)	परब्रह्म की	नमस्कारात्मक

संस्कृतग्रन्थों की श्लोकसंख्या

रचना	कुल श्लोक संख्या
1. मेघदूतम्	पूर्वमेघ 67 उत्तरमेघ 54 = 121 इसमें 6 श्लोक प्रक्षिप्त। कुल = 63 + 52 = 115 श्लोक (मल्लिनाथ के अनुसार)
2. उत्तररामचरितम्	लगभग 256 (तृतीय अङ्क में – 48)
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	लगभग 196 (चतुर्थ अङ्क में– 22)
4. किरातार्जुनीयम्	लगभग 1030 (कुछ विद्वानों के अनुसार– 1040) (प्रथमसर्ग में–46)

5. नीतिशतकम्	लगभग 111 (11 पद्धतियाँ)
6. शृङ्गारशतकम्	लगभग 103
7. वैराग्यशतकम्	लगभग–111
8. रघुवंशम्	लगभग 1569
9. वाल्मीकीयरामायणम् (चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता)	लगभग–24000, (7 काण्ड, 500 सर्ग)
10. महाभारतम् (शतसाहस्रीसंहिता)	लगभग – एक लाख श्लोक, 18 पर्व
11. शिशुपालवधम्	लगभग 1650 (प्रथम सर्ग में – 75)
12. नैषधीयचरितम्	लगभग 2830 (प्रथम सर्ग में–145)
13. मृच्छकटिकम्	लगभग–380 (दश अङ्क)
14. गीता	लगभग–700, 18 अध्याय
15. भट्टिकाव्यम् (रावणवध)–भट्टि	लगभग–1624 श्लोक, 22 सर्ग
16. हरविजयम् (रत्नाकर)	4321 श्लोक, 50 सर्ग
17. राघवपाण्डवीय-कविराज	668 श्लोक, 13 सर्ग
18. भास के तेरह नाटक	1092 श्लोक
19. मालविकाग्निमित्रम्	96 श्लोक, 5 अङ्क
20. अनर्घराघवम्	567 श्लोक, 7 अङ्क
21. बालरामायणम्	741 पद्य, 10 अङ्क
22. ऋतुसंहारम्	144 श्लोक, 6 सर्ग

संस्कृतग्रन्थों के उपजीव्यग्रन्थ

रचना	उपजीव्यग्रन्थ
1. रघुवंशम् (कालिदास)	वाल्मीकीयरामायण एवं पद्मपुराण
2. मेघदूतम् (कालिदास)	ब्रह्मवैवर्तपुराण से कथानक तथा वाल्मीकि रामायण से दूत की कल्पना
3. किरातार्जुनीयम् (भारवि)	महाभारत का वनपर्व
4. **शिशुपालवधम्** (माघ)	(i) महाभारत का सभापर्व (सर्ग 33 से 45 तक) (ii) श्रीमद्भागवतपुराण (10 वाँ स्कन्ध, 74वाँ अध्याय)
5. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष)	महाभारत के वनपर्व का नलोपाख्यान
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)	(i) महाभारत आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (अध्याय 67 से 74 तक) (ii) पद्मपुराण
7. उत्तररामचरितम् (भवभूति)	वाल्मीकीयरामायण का उत्तरकाण्ड (सर्ग 42 से 97 तक)
8. वेणीसंहारम् (भट्टनारायण)	महाभारत का सभापर्व
9. मृच्छकटिकम् (शूद्रक)	भासकृत 'चारुदत्तम्' नाटक
10. कादम्बरी (बाणभट्ट)	गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' (सुमनस् वृत्तान्त)
11. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्त व्यास)	इतिहासप्रसिद्ध कथानक
12. बुद्धचरितम् (अश्वघोष)	'ललितविस्तर' बौद्धग्रन्थ, इतिहासप्रसिद्ध
13. कुमारसम्भवम् (कालिदास)	श्रीमद्भागवतमहापुराण
14. सौन्दरानन्द (अश्वघोष)	इतिहासप्रसिद्ध
15. स्वप्नवासवदत्तम् (भास)	इतिहासप्रसिद्ध उदयनविषयक लोककथायें
16. प्रतिमानाटकम् (भास)	वाल्मीकीयरामायण (अयोध्याकाण्ड से रावणवध तक)
17. अभिषेकनाटकम् (भास)	वाल्मीकीयरामायणम्
18. पञ्चरात्रम् (भास)	महाभारतम्
19. मध्यमव्यायोग (भास)	महाभारतम्
20. कर्णभारम् (भास)	महाभारतम्
21. दूतघटोत्कचम् (भास)	महाभारतम्

22. बालचरितम् (भास) महाभारतम्
23. उरुभङ्ग (भास) महाभारतम्
24. प्रतिज्ञायौगन्धरायण (भास) उदयनकथाश्रित
25. मालविकाग्निमित्रम् (कालिदास) इतिहासप्रसिद्ध
26. विक्रमोर्वशीयम् (कालिदास) ऋग्वेद एवं महाभारतम्
27. रत्नावली (हर्ष) उदयनकथाश्रित/कविकल्पित इतिहासप्रसिद्ध
28. महावीरचरितम् (भवभूति) वाल्मीकिरामायण
29. प्रसन्नराघवम् (जयदेव) वाल्मीकिरामायण
30. नलचम्पू (त्रिविक्रमभट्ट) महाभारत
31. मुद्राराक्षस (विशाखदत्त) इतिहासप्रसिद्ध, विष्णुपुराण
32. प्रियदर्शिका (हर्ष) कविकल्पनाप्रसूत
33. मालतीमाधवम् (भवभूति) कविकल्पनाप्रसूत
34. अनर्घराघवम् (मुरारि) वाल्मीकिरामायणम्
35. प्रबोधचन्द्रोदय (कृष्णमिश्र) कविकल्पनाप्रसूत
36. हर्षचरितम् (बाण) इतिहास प्रसिद्ध
37. ऋतुसंहारम् (कालिदास) कविकल्पित
38. भट्टिकाव्य/रावणवध (भट्टि) वाल्मीकिरामायण
39. जानकीहरणम् (कुमारदास) वाल्मीकि रामायण
40. हरविजयम् (रत्नाकर) शिशुपालवध का प्रभाव
41. शारिपुत्रप्रकरणम् (अश्वघोष) इतिहासप्रसिद्ध

संस्कृतग्रन्थों में नायक-नायिका

रचना	नायक	नायिका
1. स्वप्नवासवदत्तम्	उदयन (धीरललित)	वासवदत्ता/पद्मावती
2. मृच्छकटिकम्	चारुदत्त (धीरप्रशान्त)	वसन्तसेना/धूता
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	दुष्यन्त (धीरोदात्त)	शकुन्तला
4. कुमारसम्भवम्	शिव	पार्वती
5. उत्तररामचरितम्	राम (धीरोदात्त)	सीता
6. किरातार्जुनीयम्	अर्जुन (नायक, धीरोदात्त) किरात (शिव, सहनायक) दुर्योधन (प्रतिनायक)	द्रौपदी
7. मेघदूतम्	यक्ष (हेममाली)	यक्षिणी (विशालाक्षी)
8. शिशुपालवधम्	श्रीकृष्ण (धीरोदात्त)	सत्यभामा/रुक्मिणी
9. नैषधीयचरितम्	नल (धीरोदात्त)	दमयन्ती
10. रत्नावली (नाटिका)	उदयन (धीरललित)	रत्नावली (सागरिका)
11. कादम्बरी कथा	चन्द्रापीड (नायक, धीरोदात्त) वैशम्पायन (सहनायक)	कादम्बरी महाश्वेता (सहनायिका)
12. दशकुमारचरितम्	राजहंस (दस राजकुमार) राजवाहन	विलासवती अवन्तिसुन्दरी
13. वेणीसंहारम्	भीम (धीरोद्धत)	द्रौपदी
14. मालविकाग्निमित्रम्	अग्निमित्र (धीरोदात्त, कुछ विद्वानों के मत में धीरललित)	मालविका

रचना	नायक	नायिका
15. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	पुरूरवा (विक्रम)	उर्वशी
16. मुद्राराक्षसम्	चाणक्य और चन्द्रगुप्त	नायिका का अभाव
17. प्रियदर्शिका	राजा उदयन (धीरललित)	आरण्यिका (प्रियदर्शिका)
18. नागानन्द	जीमूतवाहन	मलयवती
19. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	(i) माधव (ii) मकरन्द	(i) मालती (ii) मदयन्तिका
20. महावीरचरितम्	राम (धीरोदात्त)	सीता
21. बुद्धचरितम्	भगवान् बुद्ध	–
22. हर्षचरितम्	हर्षवर्धन	–
23. रघुवंशम्	श्रीराम (रघु)	सीता
24. कर्पूरमञ्जरी	चन्द्रपाल	कर्पूरमञ्जरी
25. प्रसन्नराघवम्	श्रीराम	सीता
26. प्रबोधचन्द्रोदय	प्रबोधचन्द्र	
27. ऊरुभङ्गम्	दुर्योधन/भीम	–

संस्कृत-ग्रन्थों में अङ्गी रस

रचना	प्रधान/मुख्य/अङ्गीरस	रचना	प्रधान/मुख्य/अङ्गीरस
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	शृङ्गार	2. मेघदूतम्	विप्रलम्भशृङ्गार
3. उत्तररामचरितम्	करुणरस	4. किरातार्जुनीयम्	वीररस
5. नैषधीयचरितम्	शृङ्गार	6. शिशुपालवधम्	वीरस
7. रघुवंशम्	वीररस	8. बुद्धचरितम्	शान्तरस
9. मृच्छकटिकम्	शृङ्गाररस	10. कुमारसम्भवम्	शृङ्गाररस
11. शिवराजविजयम्	वीररस	12. स्वप्नवासवदत्तम्	शृङ्गाररस
13. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	शृङ्गाररस	14. महावीरचरितम् (नाटक)	वीररस
15. मालविकाग्निमित्रम्	शृङ्गाररस	16. विक्रमोर्वशीयम्	शृङ्गाररस
17. मुद्राराक्षसम्	वीररस	18. प्रियदर्शिका	शृङ्गाररस
19. रत्नावली	शृङ्गाररस	20. नागानन्द	शान्तरस/वीररस
21. वेणीसंहारम्	वीररस	22. कुन्दमाला	करुणरस
23. प्रबोधचन्द्रोदय	शान्तरस	24. शृङ्गारशतकम्	शृङ्गाररस
25. गीतगोविन्दम्	शृङ्गाररस	26. रावणवध (भट्टिकाव्यम्)	वीररस
27. जानकीहरणम्	शृङ्गाररस	28. कर्पूरमञ्जरी	शृङ्गाररस
29. शारिपुत्रप्रकरणम्	शान्तरस	30. अनर्घराघवम्	शृङ्गाररस
31. रामायणम्	करुणरस	32. महाभारतम्	शान्तरस

संस्कृत-ग्रन्थों में प्रयुक्त छन्द

ग्रन्थ	ग्रन्थों में प्रयुक्त प्रमुख छन्द
1. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)	वंशस्थ, 45वें में पुष्पिताग्रा, अन्तिम 46वें में–मालिनी (कुल प्रयुक्त छन्द–22)
2. शिशुपालवधम्	वंशस्थ, अनुष्टुप्, उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द – 25)
3. नैषधीयचरितम्	उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द–19)
4. मेघदूतम्	मन्दाक्रान्ता (सम्पूर्ण ग्रन्थ में)
5. रघुवंशम्	उपजाति, अनुष्टुप्
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	आर्या, वसन्ततिलका, अनुष्टुप् (कुल प्रयुक्त छन्द–24)
7. मृच्छकटिकम्	अनुष्टुप् (कुलप्रयुक्त छन्द–21)
8. उत्तररामचरितम्	अनुष्टुप् शिखरिणी (कुल प्रयुक्त छन्द 19)
9. बुद्धचरितम्	अनुष्टुप्, उपजाति
10. भट्टिकाव्यम् (रावणवधम्)	अनुष्टुप्, उपजाति, आर्या, और पुष्पिताग्रा आदि अनेक छन्द
11. मुद्राराक्षसम्	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, शिखरिणी
12. वेणीसंहारम्	अनुष्टुप् (62), वसन्ततिलका (38) शार्दूलविक्रीडित (34) (कुलप्रयुक्त छन्द–18)
13. बालरामायणम्	शार्दूलविक्रीडित और स्रग्धरा।
14. प्रसन्नराघवम्	वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी।
15. अमरुकशतकम्	शार्दूलविक्रीडितम्
16. कुमारसम्भवम्	अनुष्टुप्
17. सौन्दरानन्द	अनुष्टुप्
18. जानकीहरणम्	अनुष्टुप्
19. हरविजय	शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता

संस्कृत ग्रन्थों का विभाजन

ग्रन्थ-ग्रन्थकार	विभाजन
1. काव्यप्रकाश (मम्मट)	दश उल्लास, 142 कारिकायें, 604 उदाहरण।
2. साहित्य दर्पण (विश्वनाथ)	दश परिच्छेद
3. रसगङ्गाधर (जगन्नाथ)	चार आनन
4. दशरूपक (धनञ्जय)	चार प्रकाश
5. काव्यादर्श (दण्डी)	तीन परिच्छेद, 660 पद्य
6. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्तव्यास)	तीन विराम, 12 निःश्वास
7. महाकाव्य	सर्गों में विभक्त (8 से अधिक सर्ग)
8. नाटक	अङ्कों में विभक्त (5 अङ्क या इससे अधिक)
9. मेघदूतम् (कालिदास)	दो खण्डों में–पूर्वमेघ, उत्तरमेघ
10. कादम्बरी कथा (बाणभट्ट)	दो भागों में–पूर्वभाग, उत्तरभाग
11. आख्यायिका	उच्छ्वासों में (हर्षचरितम् में 8 उच्छ्वास)
12. वक्रोक्तिजीवितम् (कुन्तक)	चार उन्मेष
13. वाल्मीकीयरामायणम् (वाल्मीकि)	7 काण्ड, 600 सर्ग, 24,000 श्लोक
14. महाभारतम् (वेदव्यासः)	18 पर्व, 1 लाख श्लोक
15. श्रीमद्भागवतपुराण (वेदव्यासः)	12 स्कन्ध, 18000 श्लोक
16. गीता (वेदव्यासः)	18 अध्याय, 700 श्लोक
17. व्यक्तिविवेक (महिमभट्ट)	तीन विमर्श

18. सरस्वतीकण्ठाभरण (भोजराज)	पाँच परिच्छेद
19. शृङ्गारप्रकाश (भोजराज)	36 प्रकाश
20. कविकण्ठाभरण (क्षेमेन्द्र)	पाँच अध्याय 55 कारिकायें।
21. अभिधावृत्तिमात्रिका (मुकुलभट्ट)	15 कारिकायें
22. ध्वन्यालोक (आनन्दवर्धन)	4 उद्योत
23. काव्यालङ्कारसारसंग्रह (उद्भट)	6 वर्गों में
24. काव्यालङ्कार (रुद्रट)	16 अध्याय, 714 आर्यायें
25. काव्यालङ्कारसूत्र (वामन)	5 अधिकरण
26. काव्यालङ्कार (भामह)	6 परिच्छेद
27. काव्यमीमांसा (राजशेखर)	18 अध्याय
28. चन्द्रालोक (जयदेव)	10 मयूख
29. राजतरङ्गिणी (कल्हण)	8 तरङ्ग
30. ऋतुसंहार (कालिदास)	6 सर्ग, 144 श्लोक
31. नाट्यशास्त्र (भरत)	36 अध्याय
32. कथासरित्सागर (सोमदेव)	18 लम्बक, 124 तरङ्ग, 22000 पद्य।
33. हितोपदेश (नारायणपण्डित)	चार परिच्छेद, 43 कहानियाँ
34. पञ्चतन्त्र (विष्णुशर्मा)	पाँच तन्त्र, पाँच मुख्य कथायें, 1003 श्लोक, 75 उपकथायें।
35. कर्पूरमञ्जरी (राजशेखर)	4 जवनिका

संस्कृत ग्रन्थों में प्रमुख वर्णन

वर्णन	ग्रन्थ	वर्णन	ग्रन्थ
1. अच्छोदसरोवर	कादम्बरी	**5. इन्द्रकीलपर्वत**	किरातार्जुनीयम् सर्ग-5
2. पम्पासरोवर	कादम्बरी	**6. शरद्वर्णन**	किरातार्जुनीयम् सर्ग 4
3. शाल्मलीवृक्ष	कादम्बरी	**7. षड्ऋतु वर्णन**	(i) शिशुपालवधम् सर्ग-6
4. रैवतकपर्वत	शिशुपालवधम्-सर्ग 4		(ii) ऋतुसंहारम्

संस्कृतग्रन्थों के अपरनाम

मुख्यग्रन्थ	अपरनाम	मुख्यग्रन्थ	अपरनाम
1. किरातार्जुनीयम्	लक्ष्मीपदाङ्कमहाकाव्यम्	**4. नलचम्पू**	दमयन्तीकथा
2. शिशुपालवधम्	श्रयङ्कमहाकाव्यम् ('श्री' पदाङ्कमहाकाव्य)	**5. अष्टाध्यायी**	अष्टक
3. नैषधीयचरितम्	आनन्दपदाङ्कमहाकाव्यम्		

संस्कृतवाङ्मय की दशत्रयी

1. बृहत्त्रयी

ग्रन्थ	कवि
1. किरातार्जुनीयम्	भारवि
2. शिशुपालवधम्	माघ
3. नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष

2. लघुत्रयी

ग्रन्थ	कवि
1. रघुवंशम्	कालिदासः
2. कुमारसम्भवम्	कालिदासः
3. मेघदूतम्	कालिदासः

3. गद्यबृहत्त्रयी

कवि	ग्रन्थ
1. सुबन्धु	वासवदत्ता
2. बाणभट्ट	कादम्बरी
3. दण्डी	दशकुमारचरितम्

4. उपजीव्यग्रन्थत्रयी

ग्रन्थः	कविः
1. रामायणम्	वाल्मीकिः
2 महाभारतम्	वेदव्यासः
3. भागवतपुराणम्	वेदव्यासः

5. पुरुषार्थत्रयी

1. धर्म
2. अर्थ
3. काम

6. पाषाणत्रयी

1. किरातार्जुनीयम् का प्रथम सर्ग
2. किरातार्जुनीयम् का द्वितीय सर्ग
3 किरातार्जुनीयम् का तृतीय सर्ग

7. गुणत्रयी

1. सत्त्वगुणः
2. रजोगुणः
3. तमोगुणः

8. मुनित्रयी

मुनिः	व्याकरणग्रन्थः	साहित्यिकग्रन्थः
1. पाणिनिः	अष्टाध्यायी	जाम्बवतीजयम्/पातालविजयम्
2. कात्यायनः	वार्तिकम्	स्वर्गारोहणम्
3. पतञ्जलिः	महाभाष्यम्	महानन्दकाव्यम्

9. प्रस्थानत्रयी

1. ब्रह्मसूत्र
2. उपनिषद्
3. गीता

10. वेदत्रयी

1. ऋग्वेद
2. यजुर्वेद
3. सामवेद

यज्ञ	यज्ञकर्ता
वाजपेय	महाकवि (भवभूति के पूर्वज)
राजसूय	युधिष्ठिर
पुत्रेष्टि	दशरथ
अश्वमेध	राम
गवालम्भ	राजा रन्तिदेव

वीणा	स्वामी	ग्रन्थ
महती	नारद	शिशुपालवधम्
कच्छपी	सरस्वती	–
घोषवती	वासवदत्ता	स्वप्नवासवदत्तम्

काव्यशास्त्रीय छः सम्प्रदाय

सम्प्रदाय	प्रवर्तक और प्रमुख आचार्य
1. रससम्प्रदाय	**भरत (प्रवर्तक)** भोजराज, भट्टनायक, विश्वनाथ, राजशेखर, केशवमिश्र, शारदातनय
2. अलङ्कारसम्प्रदाय	**भामह** (प्रवर्तक), दण्डी, उद्भट, प्रतिहारेन्दुराज रुद्रट, जयदेव, अप्पयदीक्षित।
3. रीतिसम्प्रदाय	**वामन** (प्रवर्तक)
4. ध्वनिसम्प्रदाय	**आनन्दवर्धन** (प्रवर्तक), रुय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त, जगन्नाथ
5. वक्रोक्तिसम्प्रदाय	**कुन्तक** (प्रवर्तक)
6. औचित्यसम्प्रदाय	**क्षेमेन्द्र** (प्रवर्तक)
चमत्कार सम्प्रदाय	कुछ आधुनिक काव्यशास्त्री

काव्यलक्षण–तालिका

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काव्यलक्षण
1. काव्यप्रकाश	**आचार्य मम्मट**	तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि–(का.प्र. प्रथमोल्लास)
2. साहित्यदर्पण	**आचार्य विश्वनाथ**	वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
3. रसगङ्गाधर	**पण्डितराज जगन्नाथ**	रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
4. काव्यालङ्कार	**भामह**	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्

5. वक्रोक्तिजीवितम्	**कुन्तक**	वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
6. काव्यालङ्कार सूत्र	**वामन**	रीतिरात्मा काव्यस्य
7. ध्वन्यालोक	**आनन्दवर्धन**	काव्यस्यात्मा ध्वनिः
8. काव्यादर्श	**दण्डी**	शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली
9. औचित्यविचारचर्चा	**क्षेमेन्द्र**	औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्
10. अग्निपुराण	**व्यास**	संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली/काव्यं स्फुरदलङ्कारं गुणवद् दोषवर्जितम्।।
11. शृङ्गारप्रकाश	**भोज**	अदोषं गुणवद्काव्यमलङ्कारैरलङ्कतम् रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति।।

काव्यशास्त्र में अलङ्कारों की संख्या

ग्रन्थ–ग्रन्थकार	अलङ्कारों की संख्या	ग्रन्थ–ग्रन्थकार	अलङ्कारों की संख्या
1. नाट्यशास्त्र–भरत	उपमा, रूपक, दीपक और यमक कुल चार अलङ्कार		
2. अग्निपुराण	09 शब्दालङ्कार +	08 अर्थालङ्कार +	06 उभयालङ्कार = 23 अलङ्कार
3. विष्णुधर्मोत्तर पुराण	18 अलङ्कार		
4. काव्यालङ्कार–भामह	38 अलङ्कार		
5. काव्यादर्श–दण्डी	37 अलङ्कार		
6. काव्यालङ्कारसारसंग्रह–उद्भट	41 अलङ्कार		
7. काव्यालङ्कार–रुद्रट	68 अलङ्कार		
8. सरस्वतीकण्ठाभरण–भोजराज	24 शब्दालङ्कार +	24 अर्थालङ्कार +	24 उभयालङ्कार = 72 अलङ्कार
9. काव्यप्रकाश – मम्मट	06 शब्दालङ्कार +	61 अर्थालङ्कार = 67 अलङ्कार	
10. अलङ्कारसर्वस्व – रुय्यक	78 अलङ्कार		
11. साहित्यदर्पण–विश्वनाथ	78 अलङ्कार		
12. चन्द्रालोक–जयदेव	100 अलङ्कार		
13. कुवलयानन्द–अप्पयदीक्षित	120 अलङ्कार		

साहित्यशास्त्र में रसों की संख्या

रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता	रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
1. शृङ्गार	**रति**	श्याम	विष्णु	**2. वीररस**	**उत्साह**	सुवर्णवत्	महेन्द्र
3. वीभत्सरस	**जुगुप्सा**	नील	महाकाल	**4. रौद्ररस**	**क्रोध**	रक्त	रुद्र
5. हास्यरस	**हास**	शुक्ल	प्रमथ	**6. अद्भुतरस**	**विस्मय**	पीत	गन्धर्व
7. भयानक रस	**भय**	कृष्ण	महाकाल	**8. करुणरस**	**शोक**	कपोत	यम
9. शान्तरस	**निर्वेद/शम**	कुन्दपुष्पवत्	श्रीनारायण				

- आचार्य भरत और धनञ्जय के अनुसार नाटक में आठरस माने गये हैं–**''अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः''–(नाट्यशास्त्र)**
- अभिनव गुप्त एवं आचार्य मम्मट आदि ने 'शान्तरस' को नवम रस के रूप में स्वीकार किया है। **''शान्तोऽपि नवमो रसः''**
- **रुद्रट** ने **'प्रेयान्'** नामक दसवें रस की उद्भावना की है।
- **रूपगोस्वामी** ने **'भक्तिरस'** को प्रधानरस माना है।
- **विश्वनाथ** नवरस के अतिरिक्त **'वात्सल्य'** नामक रस को भी स्वीकार करते हैं।
- **भवभूति** ने **'करुणरस'** को ही एकमात्र मूलरस मानते हैं–**''एको रसः करुण एव''**

आचार्य भरत प्रतिपादित रससूत्र

● आचार्य भरत द्वारा 'नाट्यशास्त्र' में प्रतिपादित रससूत्र– ''**विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः**'' अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारिभाव के संयोग से 'रस' की निष्पत्ति होती है।

आचार्य भरत प्रतिपादित 'रससूत्र' के व्याख्याकार

व्याख्याकार	समय	मत	दर्शन
1. भट्टलोल्लट	नवमशताब्दी	उत्पत्तिवाद (उत्पाद्य-उत्पादक)	मीमांसा
2. शङ्कुक	नवमशताब्दी	अनुमितिवाद (अनुमाप्य-अनुमापक)	न्याय
3. भट्टनायक	11वीं शताब्दी	भुक्तिवाद (भोज्य-भोजक)	सांख्य
4. अभिनवगुप्त	11वीं शताब्दी	अभिव्यक्तिवाद (व्यङ्ग्य-व्यञ्जक)	शैव/वेदान्त

शंखों के नाम

देव	शंख
1. श्रीकृष्ण	पाञ्चजन्य
2. युधिष्ठिर	अनन्तविजय
3. भीम	पौण्ड्र
4. अर्जुन	देवदत्त
5. नकुल	सुघोष
6. सहदेव	मणिपुष्पक

नायकों की कोटियाँ

धीरोदात्त – राम, कृष्ण, अर्जुन, चन्द्रापीड, दुष्यन्त, शिवाजी।
धीरोद्धत – भीम, परशुराम, दुर्योधन आदि।
धीरललित – यक्ष, उदयन आदि।
धीरप्रशान्त – चारुदत्त आदि।

नायिकाओं की कोटियाँ

स्वकीया प्रौढा – सीता, द्रौपदी
स्वकीया मध्या – यक्षिणी
स्वकीया मुग्धा – शकुन्तला, कादम्बरी, महाश्वेता

संस्कृत-रूपकों के दशभेद

रूपक	अङ्क-संख्या	उदाहरणम्
1. नाटक	5 से 10 अङ्क	अभिज्ञानशाकुन्तलम्, स्वप्नवासवदत्तम्, उत्तररामचरितम्
2. प्रकरण	10 अङ्क	मृच्छकटिकम्, मालतीमाधवम्, शारिपुत्रप्रकरण पुष्पभूषित
3. भाण	1 अङ्क	लीलामधुकरम्, शृङ्गारशेखर, मर्कटमदलिका, धूर्तसमागम
4. व्यायोग	1 अङ्क	सौगन्धिकाहरणम्, जामदग्न्यजय
5. समवकार	3 अङ्क	समुद्रमन्थनम् (12 नायक), नवग्रहचरितम्
6. डिम	4 अङ्क	त्रिपुरदाह (16 नायक)
7. ईहामृग	4 अङ्क /1 अङ्क	कुसुमशेखरविजयम्
8. अङ्क (उत्सृष्टिकाङ्क)	1 अङ्क	शर्मिष्ठा-ययातिः
9. वीथी	1 अङ्क	मालविका
10. प्रहसन	1 अङ्क	कन्दर्पकेलिः/धूर्तचरितम्
● नाटिका	4 अङ्क	रत्नावली, प्रियदर्शिका
● सट्टक	4 अङ्क	कर्पूरमञ्जरी

संस्कृतनाटकों में विदूषक

नाटक	विदूषक	नाटक	विदूषक
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)	माढव्य/माधव्य	**6. स्वप्नवासवदत्तम् (भास)**	वसन्तक
2. विक्रमोर्वशीयम् (कालिदास)	माणवक	**7. मालतीमाधवम् (भवभूति)**	विदूषक का अभाव
3. मालविकाग्निमित्रम् (कालिदास)	गौतम	**8. महावीरचरितम् (भवभूति)**	विदूषक का अभाव
4. मृच्छकटिकम् (शूद्रक)	मैत्रेय	**9. उत्तररामचरितम् (भवभूति)**	विदूषक का अभाव
5. रत्नावली (श्रीहर्ष)	वसन्तक	**10. मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त)**	विदूषक का अभाव

संस्कृत नाटकों में कञ्चुकी

नाटक	कञ्चुकी का नाम	नाटक	कञ्चुकी का नाम
1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	बादरायण	**5. उत्तररामचरितम्**	गृष्टि
2. दूतवाक्यम्	बादरायण	**6. रत्नावली**	बाभ्रव्य
3. स्वप्नवासवदत्तम्	बादरायण	**7. वेणीसंहारम्**	जयन्धर (युधिष्ठिर का)
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	वातायन		विनयन्धर (दुर्योधन का)

नाटकीय पञ्चीकरण

पञ्च अर्थप्रकृतियाँ	पञ्च कार्यावस्थायें	पञ्च सन्धियाँ	पञ्च अर्थोपक्षेपक	पञ्चनाटककार
1. बीज	1. आरम्भ	1. मुखसन्धि	1. विष्कम्भक	1. भास
2. बिन्दु	2. यत्न	2. प्रतिमुखसन्धि	2. चूलिका	2. कालिदास
3. पताका	3. प्राप्त्याशा	3. गर्भसन्धि	3. अङ्कास्य	3. शूद्रक
4. प्रकरी	4. नियताप्ति	4. अवमर्श/विमर्शसन्धि	4. अङ्कावतार	4. विशाखदत्त
5. कार्य	5. फलागम	5. उपसंहृति/निर्वहणसन्धि	5. प्रवेशक	5. भवभूति

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम	**आश्रम प्रवेश**	34
द्वितीय	**आश्रमनिवेश**	18
तृतीय	**मिलन**	24
चतुर्थ	**विदा**	22
पञ्चम	**प्रत्याख्यान**	31
षष्ठ	**पश्चात्ताप**	32
सप्तम	**पुनर्मिलन**	35
	योग =	**196**

उत्तररामचरितम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम	**चित्रदर्शन**	51
द्वितीय	**पञ्चवटीप्रवेश**	30
तृतीय	**छाया**	48
चतुर्थ	**कौशल्याजनकयोग**	29
पञ्चम	**कुमारविक्रम**	35
षष्ठ	**कुमारप्रत्यभिज्ञान**	42
सप्तम	**सम्मेलन**	21
	योग =	**256**

मृच्छकटिकम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोक संख्या	अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोक संख्या
प्रथम	**अलङ्कारन्यास**	58	तृतीय	**सन्धिच्छेद**	30
द्वितीय	**द्यूतकरसंवाहक**	20	चतुर्थ	**मदनिकाशर्विलक**	33

पञ्चम	**दुर्दिन**	52
षष्ठ	**प्रवहणविपर्यय**	27
सप्तम	**आर्यकापहरण**	09
अष्टम	**वसन्तसेनामोटन**	47
नवम	**व्यवहार** (न्यायालय)	43
दशम	**संहार** (उपसंहार)	61
	योग =	**380**

रत्नावली के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम अङ्क	**मदनमहोत्सव**	26
द्वितीय अङ्क	**कदलीगृहम्**	21
तृतीय अङ्क	**सङ्केतक**	19
चतुर्थ अङ्क	**ऐन्द्रजालिक**	20
		86

छन्दों में वर्णों की संख्या

छन्द	वर्णों की संख्या
अनुष्टुप्	08 × 4 = 32
इन्द्रवज्रा	11 × 4 = 44
उपेन्द्रवज्रा	11 × 4 = 44
उपजाति	11 × 4 = 44
रथोद्धता	11 × 4 = 44
शालिनी	11 × 4 = 44
स्वागता	11 × 4 = 44
वंशस्थ	12 × 4 = 48
द्रुतविलम्बित	12 × 4 = 48

छन्द	वर्णों की संख्या
तोटक (त्रोटक)	12 × 4 = 48
भुजङ्गप्रयात	12 × 4 = 48
प्रहर्षिणी, अतिरुचिरा	13 × 4 = 52
वसन्ततिलका	14 × 4 = 56
मालिनी	15 × 4 = 60
पञ्चचामर	16 × 4 = 64
शिखरिणी, हरिणी, पृथ्वी, मन्दाक्रान्ता	17 × 4 = 68
शार्दूलविक्रीडित	19 × 4 = 76
स्रग्धरा	21 × 4 = 84

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थों के अपरनाम

ग्रन्थ का नाम	अपरनाम
1. ऋग्वेद	**दशतयी**
2. शुक्ल यजुर्वेद	**माध्यन्दिन संहिता, वाजसनेयी संहिता**
सामवेद	**उद्गातृ-वेद**
अथर्ववेद	**ब्रह्मवेद**
ताण्ड्य ब्राह्मण	**महाब्राह्मण, पंचविंश, प्रौढ़**
छान्दोग्य ब्राह्मण	**उपनिषद् ब्राह्मण**
छान्दोग्योपनिषद्	**तण्डिनाम् उपनिषद्**
केनोपनिषद्	**तवल्कारोपनिषद्**
शांखायन आरण्यक	**कौषीतकि आरण्यक**
आरण्यक	**रहस्यग्रन्थ**
ऋक् प्रातिशाख्य	**पार्षद् (परिषद् सूत्र)**
निरुक्त	**शब्दव्युत्पत्तिशास्त्र, निर्वचन शास्त्र**
ज्योतिष	**प्रत्यक्षशास्त्र, कालविधानशास्त्र**
हिरण्यकेशी गृह्यसूत्र	**सत्याषाढ़ गृह्यसूत्र**
कातन्त्रसूत्र	**कालापव्याकरण**

ग्रन्थ का नाम	अपरनाम
व्याकरण	**शब्दशास्त्र**
लघुपाराशरी	**उडुदायप्रदीप**
काठक गृह्यसूत्र	**लौगाक्षि गृह्यसूत्र**
बृहत्संहिता	**वाराही संहिता**
वेदान्तसूत्र	**चतुर्लक्षणी**
मीमांसासूत्र	**द्वादशलक्षणी**
ब्रह्मसूत्र	**शारीरकसूत्र**
ब्रह्मपुराण	**आदिपुराण**
अग्निपुराण	**विश्वकोष**
नारद पुराण	**बृहन्नारदीय पुराण**
श्रीमद्भागवत पुराण	**दशलक्षणी पुराण**
वायुपुराण	**शिवपुराण**
रामायण	**चतुर्विंशतिसाहस्त्रीसंहिता, आदिमहाकाव्य आर्यभट्टाकाव्य**
भुशुण्डिरामायण	**महारामायण**

योगवाशिष्ठ	**आर्षरामायण**
महाभारत	**शतसाहस्त्रीसंहिता**
सेतुबन्धमहाकाव्य	**सूक्तिरत्नाकर**
जाम्बवतीजय	**पातालविजय**
रावणवध	**भट्टिकाव्य**
काव्यशास्त्र	**साहित्यविद्या**
नाट्यशास्त्र	**षट्साहस्त्री संहिता**
कुमारपालितचरित	**द्वयाश्रयमहाकाव्य**
नैषधीयचरितम्	**शास्त्रकाव्य, श्रयंक**
प्रबन्धकोश	**चतुर्विंशतिप्रबन्ध**
नलचम्पू	**हरचरणसरोजाङ्क**
हनुमन्नाटक	**महानाटक**
गीतगोविन्द	**शृंगारमहाकाव्य, संगीतरूपक,**
संस्कृतमहाकोश	**पीटर्सबर्ग कोश**

संस्कृत में सर्वप्रथम/सर्वप्राचीन/सर्वश्रेष्ठ

प्राचीनतम वेद	**ऋग्वेद**
प्राचीनतम पुराण	**ब्रह्मपुराण**
स्मृतिग्रन्थों में प्राचीनतम	**मनुस्मृति**
प्राकृत काव्यों में प्राचीनतम	**सेतुबन्ध**
आर्य भाषाओं में प्राचीनतम	**वैदिक संस्कृत**
लोककथा प्राचीनतम संग्रह	**बृहत्कथा**
शिक्षा के प्राचीनतम ग्रन्थ	**प्रातिशाख्य**
भाषाशास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ	**निरुक्त**
मनुस्मृति के प्राचीनतम टीकाकार	**मेधातिथि**
वेदाङ्ग के प्राचीनतम ग्रन्थ	**कल्पसूत्र**
अमरुकशतक के प्राचीनतम टीकाकार	**अर्जुनवर्मदेव**
सर्वश्रेष्ठ कर्म	**यज्ञ**
सर्वश्रेष्ठ वेदभाष्यकर्ता	**आचार्य सायण**
सर्वश्रेष्ठ गद्यकार	**बाणभट्ट**
सर्वश्रेष्ठ वैयाकरण	**महर्षि पाणिनि**
सर्वश्रेष्ठ नाटककार	**कालिदास**
सर्वश्रेष्ठ प्रतीकात्मक नाटक	**प्रबोधचन्द्रोदय**
सर्वश्रेष्ठ तान्त्रिक ग्रन्थ	**तन्त्रालोक**
संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ कवि	**कालिदास**
कश्मीरी लेखकों में सर्वश्रेष्ठ	**अभिनवगुप्त**
शाकुन्तल का सर्वश्रेष्ठ अङ्क	**चतुर्थ**
रससूत्र के सर्वश्रेष्ठ भाष्यकार	**अभिनवगुप्त**
शङ्करभट्ट के अनुसार सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार	**विज्ञानेश्वर**
संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि	**कालिदास**
राजशेखर के मत में सर्वश्रेष्ठ नाटक	**स्वप्नवासवदत्तम्**
शृङ्गाररस के सर्वश्रेष्ठ कवि	**कालिदास**
करुणरस के सर्वश्रेष्ठ कवि	**भवभूति**
संस्कृत गद्यसाहित्य की सर्वोकृष्ट रचना	**कादम्बरी**
ब्राह्मण ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ देवता	**प्रजापति**
केरलीय राजाओं में सर्वश्रेष्ठ	**रामवर्मा**
सर्वप्रथम नाटककार	**भास**
मीमांसा के सर्वप्रथम भाष्यकार	**शबर**
चम्पू ग्रन्थों में सर्वप्रथम	**नलचम्पू**
कालिदास की प्रथम कृति	**ऋतुसंहार**
प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास (संस्कृत)	**शिवराजविजय**
सुभाषित संग्रह का प्रथम ग्रन्थ	**गाथासप्तशती**
प्रथम ऐतिहासिक काव्य	**नवसाहसाङ्कचरित**
समुपलब्ध प्रथम गद्यकार	**दण्डी**
प्रथम लौकिक खण्डकाव्य	**मेघदूतम्**
प्रथम बौद्ध नाटककार	**अश्वघोष**
संस्कृत का प्रथम महाकाव्य	**जाम्बवतीविजय**
अद्वैत के प्रथम आचार्य	**गौडपादाचार्य**
प्रस्थानत्रयी के प्रथम भाष्यकार	**शङ्कराचार्य**
बाणभट्ट की प्रथम रचना	**हर्षचरितम्**
काव्यप्रकाश की प्रथम टीका	**संकेत (माणिक्यचन्द्र कृत)**
जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर	**ऋषभदेव**
प्राकृत का प्रथम गीतिकाव्य	**गाथासप्तशती**
संस्कृत की प्रथम नाटिका	**रत्नावली**
कलापक्ष के प्रथम आचार्य	**भारवि**
उपलब्ध प्रथम प्रतीक नाटक	**प्रबोधचन्द्रोदय**
पुराणों में प्रथम	**ब्रह्मपुराण**
महाभारत के प्राचीन टीकाकार	**देवबोध**
भाषाविज्ञान के प्राचीन पण्डित	**यास्क**
सबसे प्राचीन धर्मसूत्र	**गौतमधर्मसूत्र**
सबसे प्राचीन शुल्बसूत्र	**बोधायनशुल्बसूत्र**
अथर्ववेद का प्राचीन नाम	**अथर्वाङ्गिरस**
काव्यशास्त्र का उपलब्ध सबसे प्राचीन ग्रन्थ	**नाट्यशास्त्र**
ज्योतिष का उपलब्ध प्राचीन ग्रन्थ	**वेदाङ्गज्योतिष**
उपजीव्यों में प्रमुख	**रामायण, महाभारत**
पाञ्चरात्र संहिताओं में प्रमुख	**अर्हिबुध्न्यसंहिता**
नास्तिक दर्शनों में सर्वप्राचीन	**चार्वाक दर्शन**

नीतिकथा साहित्य का सर्वप्राचीन ग्रन्थ	**पञ्चतन्त्र**	सबसे बड़ा शुल्बसूत्र	**बोधायन**
व्याकरण दर्शन का सर्वोत्तम ग्रन्थ	**वाक्यपदीय**	वेद व्याख्याकारों में अग्रगण्य	**सायणाचार्य**
स्मृति ग्रन्थों में सर्वाधिक प्रसिद्ध	**मनुस्मृति**	ऐतिहासिक काव्यों में अग्रणी	**राजतरंगिणी**
वैष्णवपुराणों में सर्वप्रसिद्ध	**श्रीमद्भागवतपुराण**	सर्वाधिक विशाल पुराण	**स्कन्दपुराण**
काव्यों में सर्वाधिक रमणीय	**नाटक**	सर्वाधिक बृहद् उपनिषद्	**बृहदारण्यकोपनिषद्**
जैन पुराणों में सर्वाधिक प्रसिद्ध	**आदिपुराण**	ब्राह्मणग्रन्थों में सबसे छोटा	**दैवत ब्राह्मण**
सामवेद की लोकप्रिय शाखा	**कौथुम शाखा**	सबसे छोटा उपनिषद्	**माण्डूक्योपनिषद्**
अथर्ववेद की लोकप्रिय शाखा	**शौनक शाखा**	सबसे छोटा पुराण	**मार्कण्डेय पुराण**
दक्षिण भारत का लोकप्रिय स्तोत्र	**नारायणीय स्तोत्र**	अर्वाचीनतम ब्राह्मण ग्रन्थ	**गोपथ ब्राह्मण**
संस्कृत का बृहत्तम महाकाव्य	**हरविजय (50 सर्ग)**	अर्वाचीन वेद	**अथर्ववेद**
चम्पू काव्यों में बृहत्तम	**वृन्दावनचम्पू**	आदिकाव्य	**रामायण**
विश्वसाहित्य का बृहत्तम ग्रन्थ	**महाभारत**	ललित कलाओं के आदि आचार्य	**भरतमुनि**
अष्टविकृति पाठों में सबसे कठिन	**घनपाठ**	ज्यामिति के आदि ग्रन्थ	**शुल्बसूत्र**

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थांश

श्रीमद्भगवद्गीता	-	**महाभारत** (भीष्मपर्व -अध्याय - 25-42)	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र	-	**महाभारत** (अनुशासन पर्व- अध्याय-149)
हरिवंशपुराण	-	**महाभारत** (महाभारत का खिलपर्व / हरिवंशपर्व)	शिवसहस्रनामस्तोत्र	-	**महाभारत** (अनुशासनपर्व- अध्याय-17)
रासपञ्चाध्यायी	-	**भागवतमहापुराण** (दशमस्कन्ध)	हंस-गीता	-	**महाभारत** (शान्तिपर्व -अध्याय-299)
दुर्गासप्तशती	-	**मार्कण्डेयपुराण** (अध्याय-81-93)	शकुन्तलोपाख्यान	-	**महाभारत** (आदिपर्व - अध्याय-68-74)
हंसगीता	-	**विष्णुधर्मोत्तरपुराण** (तृतीयखण्ड- अध्याय 227-342)	नलोपाख्यान	-	**महाभारत** (वनपर्व-अध्याय-53-79)
अध्यात्म-रामायण	-	**ब्रह्माण्ड पुराण** (उत्तरखण्ड का एक भाग)	रामोपाख्यान	-	**महाभारत** (वनपर्व- अध्याय-274-91)
पराशर-गीता	-	**महाभारत** (शान्तिपर्व-अध्याय-290-98)	सावित्र्युपाख्यान	-	**महाभारत** (वनपर्व-अध्याय -292-99)
			शङ्करगीता	-	**विष्णुधर्मोत्तरपुराण** (प्रथमखण्ड, अध्याय-52-65)

संस्कृत के प्रमुख ग्रन्थों की विशेष संज्ञा

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद	-	**वेदत्रयी**
किरातार्जुनीयम् , शिशुपालवधम् , नैषधीयचरितम्	-	**संस्कृत साहित्य के बृहत्त्रयी**
ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश, रसगङ्गाधर	-	**काव्यशास्त्र के बृहत्त्रयी**
चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, अष्टांगहृदय	-	**आयुर्वेद के बृहत्त्रयी**
कुमारसम्भवम् , रघुवंशम् ,मेघदूतम्	-	**संस्कृत साहित्य के लघुत्रयी**
उपनिषद् , गीता, ब्रह्मसूत्र	-	**प्रस्थानत्रयी**
पाणिनि, पतञ्जलि, कात्यायन	-	**व्याकरण के मुनित्रय**
वेदव्यास, पराशर, शुकदेव	-	**पुराणों के मुनित्रय**
श्रृंगारशतक, नीतिशतक, वैराग्यशतक	-	**शतकत्रय**

किरातार्जुनीय महाकाव्य के प्रथम तीन सर्ग	-	**पाषाणत्रय**
पञ्चास्तिकायसार, समयसार, प्रवचनसार	-	**जैन सम्प्रदाय के नाटकत्रयी**
विनयपिटक, सुत्तपिटक, अभिधम्मपिटक	-	**बौद्धदर्शन के त्रिपिटक**
खण्डनखण्डखाद्य, तत्त्वदीपिका, अद्वैतसिद्धि	-	**वेदान्तदर्शन के कठिनत्रयी**
उपनिषद् , गीता, ब्रह्मसूत्र, भागवत	-	**प्रस्थान चतुष्टयी**
गीता, विष्णुसहस्रनाम, अनुगीता, भीष्मस्तवराज, गजेन्द्रमोक्ष	-	**महाभारत के पञ्चरत्न**

प्रमुख ग्रन्थांशो की विशेष संज्ञा

शुक्लयजुर्वेद का 40वाँ अध्याय	-	**ईशावास्योपनिषद्**
तैत्तिरीयारण्यक का दशम प्रपाठक	-	**महानारायणोपनिषद्**
शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 6 अध्याय	-	**बृहदारण्यकोपनिषद्**
आपस्तम्बधर्मसूत्र का 8वाँ पटल	-	**अध्यात्मपटल**
गीता का 18वाँ अध्याय	-	**एकाध्यायीगीता**
किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग	-	**चित्रकाव्य**

